



अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

सए सए उवदण्णे,
सिद्धिमेव ण अन्नहा।
अपने मत की प्रशंसा करने वाले
कहते हैं—अपने-अपने सांप्रदायिक
अनुष्ठान में ही सिद्धि होती
है, दूसरे प्रकार से
नहीं होती।

नई दिल्ली

● वर्ष 25 ● अंक 7 ● 20-26 नवंबर, 2023



प्रत्येक सोमवार

● प्रकाशन तिथि : 18-11-2023 ● पेज : 12

₹10 रुपये

आठ वर्ष तक के नौनिहाल कर सकेंगे गुरु चरण स्पर्श

पदार्थों के प्रति व्यक्ति कम करे आसक्ति : आचार्यश्री महाश्रमण

नंदनवन, 18 नवंबर, 2023

कार्तिक शुक्ला एकम-गुजराती नव वर्ष का प्रथम दिन। पूज्यप्रवर ने विशेषकर गुजरात के श्रावकों को बेसता वर्ष के उपलक्ष्य में प्रातः लगभग 9 बजकर 29 मिनट पर विशेष वृहद् मंगलपाठ सुनवाया एवं नववर्ष की आध्यात्मिक मंगलकामनाएँ प्रेषित की। पूज्यप्रवर की पावन सन्निधि में गुजरात से अनेकजन पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ पहुँचे हुए थे।

महाप्रतापी, पुण्य प्रभावी आचार्यश्री महाश्रमणजी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र में तप के मूल दो प्रकार के बताए गए हैं—बाह्य तप और आभ्यंतर तप। बाह्य तप के छः प्रकारों में चौथा प्रकार है—रस परित्याग। इन छः प्रकारों में चार प्रकार आहार संयम के संदर्भ में हैं। ऊनोदरी भी एक प्रकार है।

दुनिया में बहुत चीजें हैं, पर आदमी यह सोचे मैं खाने के उपकरणों का संयम रखूँ। भोज्य पदार्थों में रस-स्वाद भी आता है। स्वादिष्ट-अच्छी लगने वाली चीजों का भी परित्याग कर देना भी संयम है।



रसपरित्याग में विकृतिवर्जन-विगय का संयम कर लेना है। आर्यबिल का प्रयोग करना बहुत संयम है। अरस-विरस जो भी

मिल गया उसमें संतोष कर लेना। रूखा-सुखा बिना चुपड़े में संतोष कर लेना रस परित्याग है।

ऊपर से त्याग करना अच्छी बात है, पर भीतर से आसक्ति छूट जाए ये बड़ी बात है। भीतरी आसक्ति नहीं छूटती तो

वह साधना की अपरिपक्वता है, दुर्बलता होती है। निमित्तों को छोड़ना भी अच्छा उपाय है, परंतु उपादान भी ठीक हो जाए। मूर्च्छा परिग्रह है। पदार्थ पाप-कर्म नहीं लगा सकते। मूर्च्छा से ही पाप कर्म लगते हैं। यह एक प्रसंग से समझाया।

भोजन जगत में बहुत बढ़िया-बढ़िया चीजें हैं, पर भोजन में संयम रखना बड़ी बात है। एक चीनी का त्याग कर देने से भोजन का बहुत संयम हो जाता है। नमक नहीं खाना भी स्वाद विजय की बात हो सकती है। पदार्थों में संयम रखना तपस्या की बात हो जाती है। द्रव्यों की भी सीमा हो सकती है। रसपरित्याग की बात अच्छी साधना हो सकती है।

जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित शासनश्री साध्वी सरोजकुमारी जी-मुंबई द्वारा लिखित स्वयं की आत्मकथा पूज्यप्रवर को लोकार्पित की गई। पूज्यप्रवर ने आशीर्वाचन फरमाया। स्मिता पंकज चौकसी ने गुजराती में गीत की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

ज्ञान के दीप जलाकर निर्वाण की दिशा में आगे बढ़ें : आचार्यश्री महाश्रमण



नंदनवन, 19 नवंबर, 2023

कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी, दीपावली का पावन पर्व पर जन-जन में अज्ञानरूपी अंधकार दूर कर ज्ञान का प्रकाश फैलाने वाले आचार्यश्री महाश्रमण जी ने भगवती सूत्र की व्याख्या करते हुए फरमाया कि तप दो प्रकार का प्रज्ञप्त है—बाह्य और आभ्यंतर। तपस्या साधना के क्षेत्र का एक अव्यव है, साधना रूपी शरीर का एक अंग

है—तप। तपस्या करने वाला तेजस्वी बन सकता है, प्रभावशाली भी बन सकता है।

प्रभावना क्या होती है, यह एक विश्लेषणीय विषय है। सबसे बढ़िया प्रभावना तो यह है कि चेतना तप और संयम से भावित हो जाए। निष्काम, बिना आडंबर तपस्या कर लेना, निर्जरा की भावना से तपस्या कर लेना बड़ी ऊँची बात हो जाती है। तपस्या में कोई कामना न हो। छोटे उद्देश्य से तपस्या

करना छोटी बात है। मोक्ष वाली सिद्धि मिल जाए वह तपस्या ऊँची सिद्धि है। यदि छोटी कामना अगर तपस्या से जुड़ जाए तो मानो उसमें घुण लग गया है।

भगवान महावीर ने तपस्या मोक्ष सिद्धि के लिए की थी, उन्हें शीतोलेश्या जैसी छोटी सिद्धि मिल भी गई पर उनका लक्ष्य एक ही था—मोक्ष। लगभग साढ़े बारह वर्ष तक अनेक तपस्याएँ की थीं।

आभ्यंतर तप को पोषण मिलने के लिए बाह्य तप करो। जितनी ऊँची तपस्या होती है, उसका उतना ही महत्त्व होता है। द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव को देखकर अपने आपको तपस्या में नियोजित करना चाहिए। अनेक रूपों में निर्जरा की हेतुभूत तपस्या की साधना की जा सकती है। दीपमालिका आती है, मिट्टी के दीप जले तो क्या, न जले तो क्या? हमारे भीतर ज्ञान के दीप जल जाएँ तो विशेष बात हो सकती है।

संसार में दीपावली का महत्त्व होता है, उल्लास का पर्व होता है। आतिशबाजी होती है, सारा हिंसा का ही काम है। हम

इसका आध्यात्मिक पक्ष देखें जो भगवान महावीर और भगवान राम से जुड़ा है। जिन पटाखों से कर्म उड़ जाएँ ऐसे पटाखे छोड़ो, तपस्या के पटाखे छोड़ो। हम निर्वाण की दिशा में आगे बढ़ने का, ज्ञान की ज्योति जलाने का प्रयास करें। आचार्य भिक्षु के प्रति कहा गया है—ज्योति का अवतार बाबा ज्योति ले आया।

हम ज्योतिष्मान बनने का प्रयास करें। भीतर की ज्योति और आगे बढ़े और आँखों की ज्योति भी अच्छी रहे। प्रज्ञा-अध्ययन के दीप जलते रहें। हमारे में अंतर्दीप जलें। गुरुदेव तुलसी और आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की कृपा से हमें ये आगम प्राप्त है, हम आगम के दीप जलाने का प्रयास करें।

आज चतुर्दशी है, पूज्यप्रवर ने हाजरी का वाचन कराते हुए प्रेरणाएँ प्रदान करवाईं। समूह में लेख पत्र का वाचन हुआ। शासनश्री साध्वी चांदकुमारी जी 'लाडनू' की स्मृति सभा

शासनश्री साध्वी चांदकुमारी जी 'लाडनू' का प्रयाण बीकानेर में हो गया था।

पूज्यप्रवर ने उनके जीवन का परिचय फरमाया। मैंने उनको देखा है, बड़ी भली साध्वीश्री थी। मेरी दीक्षा पर वो सरदारशहर में ही विराज रही थी। कार्तिक कृष्णा एकादशी को मध्याह्न में संधारे में प्रयाण कर गई थी। उनकी आत्मा के प्रति मंगलभावना-श्रद्धांजलि के रूप में चार लोगस का ध्यान करवाया। पीछे जो साध्वियाँ हैं, अच्छा विकास करती रहें।

मुख्य मुनि महावीर कुमारजी, साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी, साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने भी उनकी आत्मा के प्रति मंगलभावना अभिव्यक्त की। साध्वी जिनप्रभा जी, साध्वी विशालयशा जी, साध्वी आरोग्यश्री जी ने भी अपनी मंगलभावना अभिव्यक्त की। साध्वियों ने समूह में दीपावली-गीत का सुमधुर संगान किया।

मुख्य मुनिश्री द्वारा समुच्चारित रामायण जो कई दिनों से प्रस्तुत की जा रही थी, उसका भी रात्रि में समापन समारोह पूज्यप्रवर की पावन सन्निधि में आयोजित है।

(शेष पृष्ठ 2 पर)



भगवान महावीर के जीवन से हम अच्छी बातें ग्रहण करने का प्रयास करें : आचार्यश्री महाश्रमण



नंदनवन, १३ नवंबर, २०२३

कार्तिक कृष्णा अमावस्या, परम दयालु, परम प्रभु का परिनिर्वाण दिवस। आज ही के दिन अर्द्धरात्रि को भगवान महावीर दो दिन के अनशन में १६ प्रहर की देशना प्रदान कराते हुए परिनिर्वाण को प्राप्त हो गए थे। प्रभु के प्रथम गणधर इंद्रभूति गौतम को भी आज ही की रात्रि में कैवल्य प्राप्त हुआ था। दोनों के जीवन से जुड़ा आज का यह पावन दिन है।

तीर्थंकर के प्रतिनिधि, वर्तमान युग के महावीर आचार्यश्री महाश्रमण जी ने जिन वाणी का रसास्वादन कराते हुए फरमाया कि तपस्या अध्यात्म साधना का एक अंग है। अहिंसा, संयम और तप धर्म है। यह अध्यात्म की सारपूर्ण बात आ गई। अहिंसा, संयम और तप के सिवाय अध्यात्म की चीज है क्या? इसके सिवाय कोई चौथी चीज मुझे अधिकृत रूप में समझा सकता है, तो मैं किसी साधु-साध्वी से समझना चाहता हूँ।

यहाँ भगवती सूत्र में तप का एक प्रकार बताया गया है—अवमोदरी-ऊनोदरी। यानी थोड़ा पेट खाली रखना, कम खाना। उपकरणों की कमी रखना, पानी कम पीना,

यह द्रव्य अवमोदरिका है। भाव अवमोदरिका के अंतर्गत गुस्से, अहंकार, माया, लोभ की ऊनोदरी आती है। भगवान महावीर ने तो कितनी तपस्या की थी।

आज कार्तिक अमावस्या का दिन है, जो भगवान महावीर के परिनिर्वाण से जुड़ा दिन है। ४६ वर्ष पूर्व गुरुदेव तुलसी की सन्निधि में दिल्ली में भगवान महावीर की पच्चीसवीं निर्वाण शताब्दी मनाई गई थी। समस्त जैन समाज की एकता के रूप में अनेक बातें उजागर हुई थीं। आज २५५०वीं निर्वाण तिथि है। थोड़ा जप-तप भी इस दिन होता रहे। इस निमित्त से एक वर्ष के कार्यक्रम का आज से शुभारंभ कर रहे हैं। अमावस्या के दिन ज्यादा से ज्यादा जप, तप, स्वाध्याय किया जाए। लोगों को भगवान और अध्यात्म के बारे में बता सकते हैं। जैनम् जयतु शासनम् के तत्वावधान में आज से शुभारंभ कर रहे हैं।

जैन धर्म की जानकारी जेल में कैदियों को व कॉलेज में छात्रों को बताकर समझाया जा सकता है। साधु-साध्वियाँ, समणियाँ, उपासक-उपासिकाएँ व श्रावक समाज भी अमावस्या के दिन यह कार्य कर सकते हैं,

ताकि लोग अधर्म से धर्म की ओर आएँ। जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा के तत्वावधान में सभी संस्थाएँ कार्य कर सकती हैं।

भगवान महावीर का जीवन बहुत साधनामय था। किसी भी धर्म-संप्रदाय में महान पुरुष हो सकते हैं, उनके जीवन से हम अच्छी बातें ग्रहण करने का प्रयास करें। अच्छी-सच्ची बात कहीं पर मिले अच्छी तो अच्छी ही है। जैन शास्त्रों में तो कितनी बढ़िया चीजें मिलती हैं और ग्रंथों में भी अच्छी बातें मिल सकती हैं।

हम तो भगवान के शासन में जैन धर्म से जुड़े हुए जी रहे हैं। उनके प्रति हमारी श्रद्धा, भक्ति और आस्था उतनी ही रहनी चाहिए। प्रभु के गुण हमारे में भी प्रकट हों। हम अध्यात्म की दिशा में आगे बढ़ें, यह मंगलकामना। पूज्यप्रवर ने तेले एवं अन्य तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए।

मुनि राहुलकुमार जी ने पूज्यप्रवर से ३५ की तपस्या के प्रत्याख्यान ग्रहण किए। चारित्रात्माओं में यह नंदनवन का पाँचवाँ मासखमण हो रहा है।

अमेरिका के ओरलैंडो में समणी सेंटर के संयोजक देवांग भाई चितलिया आदि पूज्यप्रवर की सन्निधि में आए हैं। पूज्यप्रवर ने इस सेंटर के लिए आशीर्वचन फरमाया। साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने भी इसके विकास की मंगलकामना की। समणी अमलप्रज्ञाजी एवं समणी अक्षयप्रज्ञा जी ने इस सेंटर की जानकारी दी। देवांग भाई चितलिया ने भी वहाँ की गतिविधियों की जानकारी दी। व्यवस्था समिति के अध्यक्ष ने भी अपनी भावना अभिव्यक्त की।

मुनि मोहजीत कुमार जी ने भगवान महावीर के प्रति अपनी भावाभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

आध्यात्मिक विकास के लिए करें संयम की साधना : आचार्यश्री महाश्रमण

नंदनवन, १० नवंबर, २०२३

जन-जन को ज्ञान का प्रकाश प्रदान कराने वाले आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि अध्यात्म की साधना में संयम का विकास, संयमपूर्वक चेतनावृत्ति का होना आवश्यक है। जो आदमी संयम की साधना नहीं करता वह अध्यात्म के क्षेत्र में विशेष विकास नहीं कर सकता। अहिंसा, संयम, तप—ये तीन धर्म के आयाम हैं। साधु के तो संयम होना ही चाहिए।

भगवती सूत्र में साधुओं को पाँच भागों में बाँटा है। हजारों-करोड़ों साधु इस सृष्टि में हैं। साधु अढाई द्वीप के पंद्रह कर्म भूमियों में ही होते हैं। सभी साधुओं में संयम होता है। यहाँ पाँच संयत प्रज्ञप्त है—सामायिक

संयत, छेदोपस्थापनिक संयत, परिहार विशुद्धिक संयत, सूक्ष्म, संपराय संयत और यथाख्यात संयत। तीर्थंकर, केवली, आचार्य, उपाध्याय सभी इसमें सम्मिलित हो जाते हैं।

दीक्षा समारोह में पहले सामायिक संयत ग्रहण कराया जाता है। लगभग सात दिनों बाद छेदोपस्थापनीय चारित्र ग्रहण कराया जाता है। महाविदेह क्षेत्र व भरत-ऐरवत के प्रथम व अंतिम तीर्थंकर के समय को छोड़कर बीच के २२ तीर्थंकरों के समय छेदोपस्थापनीय संयत नहीं आता है। परिहार विशुद्धिक संयत एक विशेष साधना है। सूक्ष्म संपराय संयत दसवें गुणस्थान के साधु के होता है। ग्यारहवें से तेरहवें गुणस्थान तक के तीर्थंकर, केवली

वीतराग जो भी यथाख्यात संयम में विराजमान होता है।

वर्तमान में यहाँ तो सभी छेदोपस्थापनिक संयत वाले साधु ही हैं। नवदीक्षित की अलग व्यवस्था होती है। चौदहवें गुणस्थान वाले सर्वोच्च स्थान पर विराजमान साधु होते हैं। कम से कम दो हजार करोड़ से भी ज्यादा साधु सृष्टि में विराजमान होते हैं। साधु तो तपोधन-संयमी होते हैं। आज धनतेरस है, गृहस्थ धन की पूजा करते हैं। हम सभी यथाख्यात संयत में आगे बढ़ने का प्रयास करें।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने बाह्य तप के बारे में समझाया।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी के ३२वें दीक्षा दिवस पर

● साध्वी नीतिप्रभा ●

वीणा बन मैं गाऊँ गान, मधुर-मधुर तबले की तान।
तानों में सपनों का संसार है, वंदन बारंबार है।।

शुभ भावों पर रहता था राज, इसीलिए कहलाए हो महाराज।
सतियों के ताज हैं, तुम पर नाज है।
कदम-कदम साकार है, उसमें अभिनव आकार है।।

समण श्रेणी आरोहण श्रमण द्वार, गुरुनिष्ठा स्युँ है जयकार।
काँटों में फूल हो, श्रद्धा में मूल हो।
समता के आगार है, ओर सजी वान्दनवार है।।

अरुण की हर किरण में दर्शन, लहर हवां चरण स्पर्शन।
यही भाव है, यही स्राव है।
मुखरित तन्त्री के तार है, तारों से रजनी संचार है।।

‘नीति’ करती अभिनंदन सतिराज, पुलक उठे ये प्राण आज।
मन बाग है, जग राग है।
जुड़ा मनांगन तार है, आशिषों की बहा दो धार है।।

लय : धीरे-धीरे बोल---

दादा-दादी चित्त समाधि शिविर का आयोजन

चेन्नई।

साध्वी लावण्यश्री जी के सान्निध्य में श्रावक समाज की उपस्थिति में ‘दादा-दादी चित्त समाधि शिविर’ का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम मंगलाचरण रंजू कोठारी द्वारा किया गया। तत्पश्चात सभा अध्यक्ष उगमराज सांड के द्वारा स्वागत स्वर में आगंतुकों का स्वागत किया गया। हेमंत डूंगरवाल ने मधुर गीतिका का संगान किया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता सुधीर कांकरिया थे। आपका पूरा परिचय सभा के उपाध्यक्ष एम०जी० बोहरा के द्वारा दिया गया। जिसके उपरांत मुख्य वक्ता ने कहा कि दादा-दादी हमारे जीवन के अमूल्य रत्न हैं। उनके साथ वक्त बिताने से हम अपनी संस्कृति और परंपराओं को सीखते हैं। वो हमारे जीवन का अमल्य हिस्सा हैं।

साध्वी दर्शितप्रभा जी ने अपने जीवन के पारिवारिक अनुभव को बताया कि हम संयुक्त परिवार में कैसे रहते थे, बड़े बुजुर्गों के साथ में रहने से कितना फायदा है। आज के विषय पर सुंदर विवेचना की। इसी क्रम में साध्वी सिद्धांतश्री जी ने अपने विचार व्यक्त किए।

साध्वी लावण्यश्री जी ने कहा कि दादा-दादी हमारे लिए एक आदर्श हैं। जीवन में सफलता और असफलता के किस्से सुनाकर महत्वपूर्ण सीख हमें देते हैं। दादा-दादी सदियों से घर की शान रहते हैं। आज विशेष रूप से दादा-दादी के लिए आयोजित कार्यक्रम में बुजुर्गों के चेहरे पर एक अलग खुशी देखने को मिली, जिसे देखकर हर कोई भाव-विभोर हो गया।

कार्यक्रम के संयोजक संपतराज चोरडिया के अथक प्रयास से यह दादा-दादी चित्त समाधि शिविर रोचक रहा। आभार ज्ञापन सभा के मंत्री अशोक खतंग ने किया।

ज्ञान के दीप जलाकर निर्वाण की दिशा...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि आचार्य मानतुंग ने भक्तामर में भगवान ऋषभ के लिए अपर शब्द प्रयोग किया है। दीपक दो प्रकार के हो सकते हैं—लौकिक और अलौकिक। भगवान ऋषभ एक ऐसे अलौकिक दीपक हैं, प्रज्वलित हो रहे हैं, किंतु उनके भीतर उस दीपक से किसी प्रकार का धुआँ नहीं निकल रहा है, वह निर्धूम है। अलौकिक दीपक में किसी प्रकार का तेल डालने की आवश्यकता नहीं रहती कि दीपक चाहे जितना झंझावात आ जाए, महावात आ जाए, उसे कोई प्रकंपित नहीं कर सकता।

साधुमार्गी संघ से उमरावमल ओस्तवाल ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

समय अमूल्य है, इसे व्यर्थ न गंवाएँ

□ मुनि कोमल कुमार 'उमरी' □

विश्वप्रसिद्ध साहित्यकार शेक्सपियर ने कहा था—'समय मनुष्यों का राजा है। यह बात सत्य है कि समय बहुत ही मूल्यवान है। जोवर्तमान क्षण का आकलन करता है, वह जान सकता कि एक क्षण को भी आगे-पीछे नहीं किया जा सकता है।

यह सच है वक्त, मौत, बदनसीबी और दुर्भाग्य से बचना इतना आसान नहीं है। समय गतिशील है, वह वास्तविकता असंभावित आशाएँ ले आता है। आप अपने समय का पूँजी के रूप में सदुपयोग करें। समय का सदुपयोग करने के लिए अपने ऊपर नियंत्रण करना सीखना चाहिए और मिलने वाले समय को व्यर्थ में नहीं गंवाना चाहिए। आप अपने में समय निष्ठा को विकसित कीजिए। यदि आप समय के मूल्य पर विचार करते हैं तो आपको समय-बद्धता की प्रेरणा अवश्य मिलेगी।

इसका तात्पर्य है कि आप अपने समय का वैसा ही आदर करेंगे, जैसा कि आप दूसरों से अपेक्षा रखते हैं। अमेरिका के राष्ट्रपति जार्ज वाशिंगटन को समयनिष्ठता अत्यधिक पसंद थी। एक बार उनके सचिव ने अपने देर से आने का कारण बताया कि उसकी घड़ी धीमी चल रही है तो उन्होंने तुरंत कहा—'या तो आप अपनी घड़ी बदल लें या हमें दूसरे सचिव की व्यवस्था करनी पड़ेगी।' एक मुक्तक में कहा—

**सर्व सम्पत्ति के बिना कोई विधान नहीं होता,
ठोस जीव के बिना कोई संस्थान नहीं होता।
केवल बाहर की उपाधि प्राप्त करने वालों,
अनुभव के बिना कोई विद्वान नहीं होता।**

एक बार एक कविराज ने फतेहसिंहजी के सम्मुख धार्मिक चर्चा छेड़ते हुए निवेदन किया कि आज मेरी बाड़ी में तेरापंथ जैन समाज के पंचम आचार्य मधवागणी तथा साधु-साध्वीजी विराज रहे हैं। वे बड़े विद्वान तथा त्यागी हैं। आप मेरी झोंपड़ी को पवित्र कराने की कृपा कराएँ। आपके आगमन से संत, समागम का पवित्र लाभ भी मिल जाएगा और रुचिकर भी लगेगा।

तेरापंथ के आचार्यों तथा साधु-साध्वियों से महाराणा का काफी परिचय पुराने समय से चला आ रहा था। वह आधार तो सुदृढ़ था ही। तात्कालिक अन्य किसी व्यवहारिक कठिनाई की संभावना का भी पता लगा लिया। फिर महाराणा ने कविराजजी के कथन को स्वीकार कर लिया। उन्होंने आचार्यश्री की सुविधा आदि पूछकर अपने आने की तिथि तथा सायंकाल में चार बजे का समय निश्चित कर दिया।

अपने निश्चित किए हुए दिन सायंकाल में महाराणा दर्शन करने के लिए आए किंतु वे अपने तय किए समय पर नहीं पहुँच सके, जब देरी से वहाँ पहुँचे तो नतमस्तक होकर आचार्यश्री मधवागणी को वंदन करते हुए, उन्होंने देरी से पहुँचने के लिए क्षमायाचना की। उनके साथ पन्नालालजी पुरोहित तथा कवि मनोहर सिंहजी सिंधी

भी थे। सभी आचार्यश्री के सम्मुख यथा-स्थान बैठ गए।

आचार्यश्री मधवागणी ने लगभग बाइस मिनट तक उन्हें उपदेश सुनाया। महाराणा दत्तावधान सुनते रहे। आचार्यश्री ने जब देखा कि सूर्यास्त हो चुका है तथा संतों के वंदन और प्रतिक्रमण के समय में देरी होती जा रही है तब उन्होंने उपदेश को उपसंहार की ओर मोड़ दिया। महाराणा का ध्यान सुनने में इतना एकाग्र था कि वे आचार्यश्री की उस भावना को सहसा पकड़ नहीं पाए, उनका ध्यान तब टूटा, जब उपदेश की बहती हुई अजस्र धारा सहसा ही रुक गई। महाराणा ने गुरुदेव के मुखारविंद की ओर देखा तो उन्होंने फरमाया कि अब तो समय संपन्न हो गया है, क्योंकि साधु-साध्वियों के संध्याकालीन प्रतिक्रमण का समय आ चुका है।

महाराणा तत्काल उठ खड़े हुए और वंदन करके वहाँ से अपने स्थान की ओर चल पड़े। उपस्थित जनता तथा पन्नालालजी व कवि मनोहर सिंहजी सिंधी भी आचार्यश्री मधवागणी के इस व्यवहार से चिंतित हुए। उन्हें यह चिंता थी कि इस प्रकार के व्यवहार से कहीं महाराणा कुपित व क्रोधित न हो जाएँ।

महाराणा तक पहुँचने वाले कुछ विरोधी लोगों ने उस स्थिति से लाभ उठाना चाहा। उन्होंने महाराणाजी से निवेदन किया जहाँ आपका असम्मान हो और आपके सम्मान का उचित ध्यान नहीं रखा जाता हो, वहाँ आपका पदार्पण हमें अखरता है, इसलिए आपको ऐसे स्थान पर नहीं जाना चाहिए।

महाराणा प्रताप सिंहजी ने कहा—'नहीं, हम उचित स्थान पर ही गए थे। हमारे असम्मान की वहाँ बात नहीं थी। वह तो अपने नियम की बात थी। गीता में जिसे 'गत स्पृह' कहा जाता है कि वे अपने नियम व समय के इतने पक्के हैं कि हमें भी इन्कार कर सकते हैं। समयनिष्ठ न होना मुर्खता है। समयनिष्ठता के प्रति अनुत्तरदायी होना समय की चोरी करना है। समय के प्रति सचेत रहना बहुत बड़ा कौशल है। यदि आप समय के प्रति सचेत हैं तो आप असफल नहीं हो सकते। और आपके सभी कार्य समय पर संपन्न होंगे।

आप विषम समय का सदुपयोग कीजिए। यदि आप अपने विषम क्षणों का लेखा-जोखा रखते हैं तो निश्चित है कि आप अपने समय के प्रभारी होंगे। जब आप किसी की प्रतीक्षा कर रहे हैं समय का उपयोग, आप कोई अच्छी पुस्तक पढ़कर, ज्ञानवर्धक टी०वी० कार्यक्रम देखकर तथा अन्य कोई आवश्यक कार्य करके कर सकते हैं।

गांधीजी व लाल बहादुर शास्त्रीजी यात्रा करते समय कुछ न कुछ कार्य करते रहते थे। कहने का तात्पर्य है कि अपने समय का सदुपयोग करने से नहीं चुकना चाहिए। समय अमूल्य है; यह किसी की प्रतीक्षा नहीं करता है। अतः आप इसे व्यर्थ न गंवाएँ तभी आप महान् बन सकेंगे। जीवन की सार्थकता इसी में निहित है।

मासखमण तप अभिनंदन समारोह

साउथ कोलकाता।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में मासखमण तपस्विनी जया गौयल का मासखमण तप अभिनंदन समारोह तेरापंथी सभा द्वारा तेरापंथ भवन में आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि जीवन रूपी महल को मजबूत बनाने तथा अपने कार्य में पूर्ण सफलता प्राप्त करने के लिए मजबूत पिल्लर की आवश्यकता रहती है। वह पिल्लर है—धर्म। धर्म अखंड दिव्य ज्योति है। धर्म जीने की कला है। जीवन का मूल्यवान पक्ष धर्म है। धर्म के बिना जीवन एकांगी बनता है। एकांगी जीवन सुखद नहीं होता। धर्म से बाह्य व आंतरिक शुद्धि होती है। धर्म से नई ऊर्जा प्राप्त होती है।

मुनिश्री ने आगे कहा कि तप का तेज निराला होता है। मन की ज्वाला तप से बुझ जाती है। जिसका तप के साथ तार जुड़ जाता है उसके पग-पग पर पुण्यनिधान है। तप से कर्मों का क्षय होता है तप विघ्न विनाशक, आत्म प्रकाशक, संघ प्रभावक है। जया गौयल ने छोटी उम्र में मासखमण कर साहस व हिम्मत का परिचय दिया है। परिवार वालों ने भी चातुर्मास में अच्छा लाभ उठाया।

इस अवसर पर बालमुनि कुणाल कुमार जी ने तप गीत प्रस्तुत किया। इस अवसर पर साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी के संदेश का वाचन तेमम की अध्यक्ष पद्मा कोचर ने व अभिनंदन पत्र का वाचन महासभा के पूर्व मुख्य न्यासी भंवरलाल बैद ने किया। तप अनुमोदना में साउथ सभा के मंत्री कमल सेठिया, अभातेमम की संगठन मंत्री रमण पटावरी, उपासक सुरेंद्र सेठिया, अजय कुमार गौयल, बृजलाल जैन, सुमन गौयल, विक्टोरिया बैद, शशि नाहर, अर्चना चोरड़िया, सुप्रिया सामसुखा, कुसुम, नीति, वत्सल गौयल आदि ने अपने भाव गीत व वक्तव्य आदि के माध्यम से व्यक्त किए।

तेमम, साउथ कोलकाता ने तप गीत प्रस्तुत किया। प्रेक्षा प्रशिक्षिकाओं ने प्रेक्षा गीत का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी ने किया। साउथ सभा द्वारा तपस्विनी जया गौयल का सम्मान किया गया।

आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अनगिनत लोगों को जीने की कला सिखाई

दिल्ली।

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी के सान्निध्य में महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी का दीक्षा कल्याणक दिवस का कार्यक्रम मनाया गया। जिसमें दिगंबर आचार्य सुनील सागरजी, आचार्य विभक्त सागरजी, ऐकल विज्ञान सागरजी, मूर्तिपूजक गच्छाधिपति धर्मधुरंधरजी, स्थानकवासी संप्रदाय के उत्तर भारतीय प्रवर्तक सुभद्र मुनिजी, उपप्रवर्तक आनंद मुनिजी, साध्वी अणिमाश्री जी आदि का एक साथ उपस्थिति होना भी बड़े गौरव का विषय है।

मुनि कमल कुमार जी ने कहा कि आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अपने त्रिसूत्री आयाम के द्वारा केवल जैन को ही नहीं जन-जन को प्रभावित किया है। आपने देश-विदेश की लंबी यात्राएँ करके अनगिनत लोगों को जीने की कला सिखाई। आपके कुशल नेतृत्व में सारा धर्मसंघ स्वस्थ-मस्त और संयम साधना में गतिमान है। आचार्य सुनील सागर जी ने कहा कि महाश्रमण जी की क्षमताओं से सारा जैन समाज लाभान्वित हो रहा है। आचार्य विभक्त सागरजी ने कहा कि इस प्रकार सबका एक साथ एकत्रित होना ही अपने आपमें बड़ी बात है, यह उनके पुण्योदय का प्रमाण है। ऐकल विज्ञान सागरजी ने कहा कि 92 वर्ष में दीक्षित होकर 23-24 वर्ष की उम्र में युवाचार्य के अंतरंग कार्य में सहयोगी बन जाना यह जीवन की बहुत बड़ी उपलब्धि है।

मूर्तिपूजक संप्रदाय के गच्छाधिपति धर्मधुरंधरजी ने कहा कि आज उनके चारित्र का अभिनंदन किया जा रहा है। हमारे लिए चारित्र पूजनीय होता है। उत्तर भारत प्रवर्तक सुभद्र मुनिजी ने कहा कि मैंने कालूगणी को तो नहीं देखा परंतु आचार्यश्री तुलसी, आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी, आचार्यश्री महाश्रमण जी को देखा है तीनों पर कालूगणी का उपकार है जो जैन आगमों का काम हुआ है और जो हो रहा है वह

बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। दीपेश मनिजी ने आचार्यश्री महाश्रमण जी के एक-एक अक्षर की नवीन व्याख्या कर सबको आकर्षित कर दिया। साध्वी अणिमाश्री जी ने आचार्य महाश्रमण जी की विनम्रता, कर्तव्यपरायणता के उदाहरण देकर सबको मंत्रमुग्ध कर दिया। इस अवसर पर शासनश्री साध्वी संघमित्रा जी द्वारा निर्मित गीत का दिल्ली के संगायकों ने प्रस्तुत कर समा बांध दिया। मुनि अमन कुमार जी, साध्वी डॉ० सुधाप्रभा जी ने भी अपने गीत और वक्तव्य से गुरुदेव का वर्धापन किया।

कार्यक्रम में दिल्ली सभा के अध्यक्ष सुखराज सेठिया, कल्याण परिषद के संयोजक के०सी० जैन, कृष्णानगर सभा के अध्यक्ष कमल गांधी, शाहदरा सभा के अध्यक्ष पन्नालाल बैद, विकास मंत्र गांधीनगर के अध्यक्ष दीपचंद सुराणा, विधानसभा अध्यक्ष रामनिवास गौयल, पश्चिम विहार से डालमचंद बैद आदि ने अपने भावों से वर्धापना की। तेमम, तेयुप का गीत भी प्रभावशाली रहा। कार्यक्रम में प्रायोजकों, संयोजकों, विधानसभा अध्यक्ष एवं स्थान प्रदाता गुरमीतजी का स्वागत किया गया। कार्यक्रम का संयोजन दिल्ली सभा के महामंत्री प्रमोद घोड़ावत ने किया।

मुनि नमि कुमार जी ने 20 की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। कार्यक्रम में उपस्थित श्राकव-श्राविकाओं ने अधिक-से-अधिक सामायिक और लगभग 250 एकासन, आर्यबिल, एकलठाना व उपवास आदि किए। कार्यक्रम में अजातशत्रु मांगीलाल सेठिया, संपतमल नाहटा, गोविंदराम बाफना, शांतिलाल जैन, जीतमल चोरड़िया आदि अनेक गणमान्यजन उपस्थित थे। कार्यक्रम को सफल बनाने में सभा के कार्यकर्ता, तेयुप, महिला मंडल आदि का सहयोग रहा। आभार ज्ञापन कार्यक्रम के संयोजक मनोज सुराणा ने किया। कार्यक्रम के लाइव प्रसारण हेतु अमर रहेगा धर्म हमारा फेसबुक पेज एवं ऋषभ बैद का श्रम रहा।

माटी के दीप जलें न जलें पर भीतर के दीप जलें

नोखा।

दीपावली पर्व ज्योत्सना, उज्वलता का प्रतीक है। सभी लोग खुशियाँ मनाते हैं। दीप जलाकर ज्योति करते हैं, किंतु मन की मलिनता मिटे। कहा भी है—'माटी के दीप जले न जलें, परंतु भीतर के दीप जलें'। अंदर मलिनता न रहे। मन साफ, स्वच्छ रहे। तब आत्मा का कल्याण होगा। भगवान महावीर आज के दिन निर्वाण पधारे, मुक्त हुए। भगवान राम भी अयोध्या पधारे—यह उद्गार शासनश्री साध्वी राजीमती जी ने दीपावली पर्व पर रखे।

भगवान महावीर के जन्म से निर्वाण तक की चित्रमय जीवन-झाँकी द्वारा साध्वी प्रभातप्रभाजी ने मार्मिक ढंग से समझाया। साध्वी कुसुमप्रभ जी, साध्वी पुलकितयशा जी ने दीपावली पर्व की सार्थकता बताते हुए प्रेम, मैत्री, करुणा, दया, सेवा भावना उत्तरोत्तर प्रवर्धमान रहे, प्रेरणा दी।

सभा उपाध्यक्ष इंद्रचंद्र बैद ने बताया कि सभा में भगवान महावीर का जाप व तपस्याएँ हुईं।



महिला मंडल के विविध आयोजन



द पावर ऑफ रीडिंग कार्यशाला का आयोजन भीलवाड़ा।

अभातेमम के निर्देशन में तेमम, भीलवाड़ा द्वारा 'द पावर ऑफ रीडिंग' शिल्पशाला शासनश्री मुनि हर्षलाल जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, नागौरी गार्डन में आयोजित की गई। नवकार महामंत्र उच्चारण से कार्यशाला का शुभारंभ हुआ। शिल्पशाला विषय पर मुनि हर्षलाल जी ने कहा कि ज्ञान प्रकाशकर है। लक्ष्यपूर्वक पढ़ा जाए तो याद रहता है। चिंतन व मनन के साथ जो पढ़ा जाता है वो ग्रहण किया जा सकता है। व्यक्ति को अन्य प्रवृत्तियों के साथ ही सदसाहित्य के अध्ययन का समय निकालना चाहिए ताकि उसका जीवन प्रशस्त बन सके।

मुनि पारस कुमार जी ने कहा कि पढ़ने से सम्यक् ज्ञान की प्राप्ति होती है। जैन परंपरा साहित्य की दृष्टि से समृद्ध है। व्यक्ति को साहित्य द्वारा ज्ञानार्जन करते हुए अपनी आत्मा को भावित करने का प्रयास करना चाहिए। मुनि यशवंत कुमार जी ने अपने उद्गार व्यक्त किए। मंडल अध्यक्षा मैना कांटेड ने स्वागत वक्तव्य के साथ कहा कि यह कार्यशाला हम सबके जीवन में सकारात्मक बदलाव लाए। अभातेमम सदस्य मनाली चोरड़िया ने कैसे, कब, क्या पढ़ना इस पर विचार एवं उषा सिसोदिया ने संशोधित संविधान की जानकारी दी।

बहनों ने गीत के माध्यम से मंगलाचरण किया। कार्यशाला का संचालन उपाध्यक्ष स्नेहलता झाबक ने किया। कोषाध्यक्ष निकिता कांटेड ने आभार ज्ञापन किया। महिला मंडल मंत्री अमिता बाबेल, निवर्तमान अध्यक्ष मीना बाबेल, सहमंत्री विनीता सुतरिया, संरक्षक परामर्शक एवं मंडल की बहनों की उपस्थिति से कार्यशाला सफल रही। मुनिप्रवर द्वारा उपस्थित बहनों ने रोज एक पृष्ठ स्वाध्याय का संकल्प ग्रहण किया।

ईरोड।

अभातेमम द्वारा निर्देशित कार्यशाला 'द पावन ऑफ रीडिंग' का आयोजन तेमम, ईरोड द्वारा किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण गीतिका से महिला मंडल की बहनों ने की। कार्यक्रम का संचालन अध्यक्ष पिंकी भंसाली ने किया। प्राची नखत ने रीडिंग का महत्त्व बताया। पिंकी जीरावाला ने बताया कि पढ़ाई के लिए बच्चों पर फोर्स करने की आवश्यकता नहीं है। जबरदस्ती करने से बच्चों के दिमाग पर गलत प्रतिक्रिया हो सकती है। बच्चों में पढ़ाई के प्रति रुचि पैदा हो ऐसा प्रयास किया जाए।

पिंकी भंसाली ने कहा कि सभी महान

लीडर्स की एक कॉमन हैबिट होती है वह है रीडिंग, जिसकी वजह से उनके अंदर एक तेज विचारों की खान थी। रीडिंग से बहुत सारे फायदे होते हैं—इमेजिनेशन पावन मजबूत होती है, पॉजिटिव साइकोलॉजी देती है। दूसरों की गलतियों से सीखने का मौका मिलता है। इसीलिए कहते भी हैं कि पुस्तकें सबसे अच्छी दोस्त होती हैं। मंत्री पूनम दुगड़ ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

नवरंगपुर।

अभातेमम के निर्देशानुसार नवरंगपुर महिला मंडल द्वारा 'द पावर ऑफ रीडिंग' कार्यशाला का आयोजन रखा गया। अध्यक्ष बाँबी ने सभी का स्वागत करते हुए 'द पावर ऑफ रीडिंग' कार्यशाला के बारे में बताया। पढ़ने की आदत से अपनी बुद्धि विकसित होती है। आपके दिमाग को तरोताजा रखता है। ज्यादा-से-ज्यादा समझदार बनता है, नई-नई चीज सिखाता है तथा आपको तनावमुक्त रखता है। सेल्फ कॉन्फिडेंस मजबूत होता है और शुरू से यह पढ़ने की आदत रहने से बुझापे में स्मरण शक्ति को रोका जा सकता है। छोटे-छोटे उदाहरण के साथ समझाया।

बहन राखी ने कहा कि जिस तरह शरीर को एक्टिव रखने के लिए व्यायाम जरूरी है, उसी प्रकार मन को एक्टिव रखने के लिए मानसिक व्यायाम जरूरी बताया। इसलिए दिन में २० मिनट जरूर कुछ ना कुछ पढ़ना ही चाहिए। गरिमा ने कहा कि पढ़ने से दिमाग तेज होने के साथ-साथ अच्छी नींद भी आती है। अच्छे उदाहरण के साथ समझाया। महिला मंडल की सभी बहनों ने जैसे तारा देवी सुराणा, रीना जैन, पूजा जैन, रीमा अग्रवाल, सुशीला देवी जैन, सरोज जैन, कांता अग्रवाल, सभी ने अपने-अपने अनुभव बताए। अंत में महिला मंडल की मंत्री रीना जैन ने सभी का आभार व्यक्त किया।

किशनगंज।

अभातेमम के निर्देशानुसार महिला मंडल, किशनगंज द्वारा 'द पावर ऑफ रीडिंग' कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। कार्यशाला का प्रारंभ मंगलाचरण द्वारा हुआ। तत्पश्चात महिला मंडल की अध्यक्षा संतोष देवी दुगड़ ने कार्यशाला एवं कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने कहा कि आज के समय में मोबाइल का ज्यादा इस्तेमाल होने लग गया है। पुराने जमाने में लोग सुबह उठकर स्वाध्याय करने लग जाते थे, उसके फलस्वरूप उनको बहुत सारी गाथाएँ आज भी याद हैं। स्वाध्याय करने से हर एक व्यक्ति का ज्ञान बढ़ जाता है। स्वाध्याय हमारी आत्मा के लिए एक शुभचिंतक है। इस कार्यशाला की मुख्य वक्ता निधि

जैन जो एक प्रशिक्षक हैं, उन्होंने कहा कि आज लोग बहुत पजल हैं, क्योंकि उनको सामान्य ज्ञान तक भी नहीं है। उन्होंने कहा कि किताबों में जादू है वह हमारे मस्तिष्क को आकार देती हैं। समाज में रहने के लिए एक अवकाश देती हैं। हमें बच्चों को भी प्रोत्साहन देते रहना चाहिए।

कार्यशाला में अणुव्रत समिति की अध्यक्षा रश्मि बैद और मीडिया प्रभारी स्वाति दपतरी ने एक छोटे से नाटक के माध्यम से पावर ऑफ रीडिंग के बारे में जानकारी दी। कार्यकारिणी सदस्य मनीषा दपतरी और हर्षिला छोरिया ने अपने भाव रखे। निवर्तमान मंत्री रचना बोथरा ने मंच संचालन किया। सभी अतिथियों का आभार ज्ञापन सहमंत्री ममता बाफना ने किया। उपाध्यक्ष मंजु देवी दपतरी एवं कार्यकारिणी बहनों की अच्छी उपस्थिति में कार्यशाला संपन्न हुई।

कोयंबदूर।

अभातेमम के निर्देशानुसार तेमम ने 'द पावर ऑफ रीडिंग' कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मंगलाचरण के द्वारा पूजा मरोठी ने किया। स्थानीय महिला मंडल अध्यक्षा मंजु सेठिया ने वक्तव्य द्वारा पधारे हुए सभी का स्वागत किया। रूप कला भंडारी ने स्वाध्याय के बारे में जानकारी दी। केसरिया शक्ति की बहनों ने मंडल गीत का संगान किया। स्थानीय कन्या मंडल की बेटियों ने नशामुक्ति पर एक लघु नाटक प्रस्तुत किया। उपाध्यक्ष मोनिका लुनिया ने मुख्य अतिथि डॉ० शशिप्रभा जी का परिचय वाचन किया। उनका सम्मान स्थानीय अध्यक्षा मंजु सेठिया व उपाध्यक्ष मोनिका लुनिया ने साहित्य व मोमेंटो के द्वारा किया। प्रोफेसर शशि प्रभा जी ने कहा कि हमें स्वाध्याय नियमित रूप से करना चाहिए। हमें सिर्फ स्वाध्याय ही नहीं उसका अध्ययन भी करना चाहिए। धन्यवाद व आभार ज्ञापन स्थानीय मंत्री सुमन सुराणा ने किया। इस कार्यशाला का संचालन उपाध्यक्ष सुशीला बाफना ने किया। कार्यक्रम में बहनों व बेटियों की उपस्थिति ८० रही।

कानपुर।

अभातेमम के तत्त्वावधान में एवं साध्वी संगीतश्री जी के सान्निध्य में 'पावर ऑफ रीडिंग' और 'पावर ऑफ सबकॉन्सियंस माइंड' कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ भवन में हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री जी ने नमस्कार महामंत्र से किया। तत्पश्चात महिला मंडल के द्वारा मंगलाचरण किया गया। साध्वी संगीतश्री जी ने कहा कि हर व्यक्ति को अपनी रीडिंग करनी चाहिए। जब हम साहित्य का वाचन करते हैं और पुस्तक पढ़ते हैं, उस समय हमारी एकाग्रता रहनी

चाहिए। जिससे हम उस बात को अच्छी तरह से प्रकट कर सकें।

इसी क्रम में साध्वी शांतिप्रभा जी, साध्वी कमलविभा जी व साध्वी मुदिताश्री जी ने कहा कि हमें बाहरी और भीतरी रीडिंग दोनों करनी चाहिए। हमें अपनी बुक के साथ दोस्ती करनी चाहिए। हर बात पर हमें सोचना चाहिए हमारा चिंतन सदैव सकारात्मक होना चाहिए। इसी क्रम में महिला मंडल की कोषाध्यक्ष प्रियंका भुतोड़िया, अंशु जम्मड़ ने भी अपने विचार रखे। सभा के अध्यक्ष धनराज सुराणा, मंत्री संदीप जम्मड़, तेयुप के अध्यक्ष दिलीप मालू ने अपने विचार रखे। धन्यवाद ज्ञापन महिला मंडल की प्रचार-प्रसार मंत्री रितू जैन द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन तेमम की मंत्री प्रभा मालू द्वारा किया गया। साध्वीश्री जी ने मंगलपाठ सुनाकर कार्यक्रम का समापन किया।

बीदासर।

साध्वी रचनाश्री जी के सान्निध्य में अभातेमम के निर्देशानुसार महिला मंडल के तत्त्वावधान में 'द पावन ऑफ रीडिंग' कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर साध्वीश्री जी ने कहा कि जीवन को समरस बनाना हो तो स्वाध्याय बहुत जरूरी है। जो अपनी संस्कृति को जानता है वही व्यक्ति अच्छे संस्कार को पाता है। संस्कृति की जानकारी सदसाहित्य से प्राप्त होती है। और अपने वातावरण को वह व्यक्ति ही शुद्ध रखता है जिस व्यक्ति के भीतर मैत्री और करुणा की भावना है। मैत्री और करुणा का बोध आगमों से प्राप्त होता है। आशावादी व्यक्ति जीवन को सरस बना लेता है।

संवेदनशील व्यक्ति शांति का जीवन जीता है। सदसाहित्य व्यक्ति को संवेदनशील बनाता है। सदसाहित्य का पठन व्यक्ति को खट्टे अनुभवों को भूलना सिखाता है और मिठे अनुभवों को जीवन के बोध पाठ के रूप में अपनाता सिखाता है। सदसाहित्य ज्ञान का विकास करता है।

ज्ञान प्राप्त कर अपने आपको पॉवरफुल बनाने का प्रयास करें। साध्वी लब्धियशा जी ने अनेक विद्वजनों के जीवन प्रसंगों का उल्लेख करते हुए बताया कि पढ़ना यानी रीडिंग करना जरूरी है। महिला मंडल ने संकल्प गीत का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन खुशबू दुगड़ ने किया। महिला मंडल की अध्यक्षा मंजु बोथरा ने विचार व्यक्त किए।

स्वस्थ जीवनशैली कार्यशाला का आयोजन भीलवाड़ा।

तेमम द्वारा स्वस्थ परिवार व स्वस्थ

समाज परियोजना के अंतर्गत स्वस्थ जीवनशैली कार्यशाला शासनश्री मुनि हर्षलाल जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, नागौरी गार्डन में आयोजित की गई। नवकार महामंत्र उच्चारण से कार्यशाला की शुरुआत हुई।

मुनिवृंद द्वारा कार्यशाला में प्रेरणा पाथेय प्रदान किया गया। कार्यशाला में प्रशिक्षक कैलाश सोमानी, प्रांत सचिव आरोग्य भारती चित्तौड़गढ़ ने स्वस्थ जीवनशैली का प्रशिक्षण प्रदान किया। महिला मंडल अध्यक्षा मैना कांटेड ने स्वागत वक्तव्य दिया। मंडल की बहनों ने प्रेरणा गीत से मंगलाचरण किया।

आभार ज्ञापन मंत्री अमित बाबेल ने किया। समागत प्रशिक्षक का तेमम द्वारा साहित्य प्रदत्तर कर सम्मान किया गया। कार्यक्रम में अभातेमम सदस्य मनाली चोरड़िया, उषा सिसोदिया एवं सभी बहनों की अच्छी उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन पिस्ता झाबक ने किया। प्रचार-प्रसार मंत्री नीलम लोढ़ा ने बताया कि तेमम द्वारा संचालित महात्मा गांधी हॉस्पिटल में आचार्य महाश्रमण फिजिओथैरेपी सेंटर का महिला मंडल अध्यक्षा मैना कांटेड एवं मंत्री अमिता बाबेल ने निरीक्षण किया।

आर्ट थैरेपी-एक कदम स्वयं को जानने की ओर

हैदराबाद।

तेमम, हैदराबाद के तत्त्वावधान में साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में हैदराबाद कन्या मंडल ने आर्ट थैरेपी कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला में ८ कन्याओं ने भाग लिया।

किशोर मंडल को भी इसमें भाग लेने के लिए बुलाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नवकार मंत्र से किया गया। डॉ० राजश्री दुगड़ ने इस कार्यशाला को रोचक रूप में प्रस्तुत किया। इससे सबको स्वयं को जानने का एक प्रयास करवाया गया। साध्वी डॉ० राजुलप्रभा जी ने सभी को बताया कि हर कार्य को पूरे लगाव से करने से उसका नतीजा अच्छा आता है। अंत में डॉ० राजश्री दुगड़ ने सभी को यह सोचने के लिए कहा कि उनको याद करें जिनसे उनकी जिंदगी में आज खुशी है और कृतज्ञता का एहसास करवाया।

संयोजिका प्रार्थना सुराना ने डॉ० राजश्री दुगड़ का परिचय दिया एवं आभार ज्ञापन किया। पूर्वा सुराना सह-संयोजिका, प्रभारी शीतल कोठारी ने डॉ० राजश्री दुगड़ का सम्मान किया।

संस्कार निर्माण शिविर का आयोजन

गुवाहाटी।

साध्वी स्वर्णरेखा जी के सान्निध्य में तेरापंथी महासभा के तत्वावधान में तेरापंथी सभा, गुवाहाटी द्वारा 9२ से 9६ वर्ष की कन्याओं के लिए संस्कार निर्माण शिविर का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। पाँच दिवसीय संस्कार निर्माण शिविर का शुभारंभ सामूहिक नमस्कार महामंत्र से हुआ। इस शिविर में साध्वीवृंद के अलावा असम की प्रथम महिला अनीता कटारिया, वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ० प्रदीप जैन, विशिष्ट चिकित्सक डॉ० दिलीप सेठिया एवं डॉ० ओ०पी० गुप्ता, पार्षद रत्ना सिंह, नमिता कोठारी, रश्मि खाटुवाला एवं अरविंद

केजरीवाल अलग-अलग दिन प्रशिक्षक एवं प्रमुख वक्ता के रूप में प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित किया। इसी क्रम में प्रथम दिवस में महासभा के उपाध्यक्ष नेमीचंद बैद, केंद्रीय संयोजक सुशील भंसाली, सभाध्यक्ष बजरंग कुमार सुराणा ने अपने भाव व्यक्त किए।

साध्वीश्री जी ने कहा कि बच्चों को कैसे संस्कारी बनाया जाए, इस उद्देश्य से महासभा का उपक्रम काफी अहम है। बच्चे इस शिविर का पूर्ण लाभ लें। कोलकाता से समागत पूजा बोथरा ने प्रशिक्षणार्थियों के लिए साध्वीवृंद से इंटरव्यू के रूप में कई जिज्ञासाओं का समाधान करवाया। इस शिविर के संयोजक निलेश पगारिया एवं

सुनीता गुजरानी ने बताया कि इस शिविर के आयोजन में केंद्रीय संयोजक सुशील भंसाली के अलावा स्थानीय स्तर पर रंजू बरड़िया, विनीता सुराणा, मीना बैद एवं रवि बुच्चा का सहयोग रहा।

इस शिविर में गुवाहाटी के अलावा सिलचर, बंगाईगाँव (साउथ), नगांव, अलीपुरद्वार, नाहरलगुन, दिनहाटा आदि से लगभग ६० प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया। तेरापंथी सभा, गुवाहाटी के अध्यक्ष बजरंग कुमार सुराणा एवं मंत्री रायचंद पटावरी ने शिविर के शुभारंभ के अवसर पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की।

योग बनाएँ स्वस्थ और भगाएँ रोग

चंडीगढ़।

मनीषी मुनि विनय कुमारजी 'आलोक' एवं योग गुरु बाबा रामदेव का पतांजलि योगपीठ, हरीद्वार में मधुर मिलन हुआ। इस अवसर पर दोनों संतों के बीच वार्तालाप में योग गुरु बाबा रामदेव ने कहा कि हमारी इंद्रियाँ अक्सर सुस्त हो जाती हैं, तब ध्यान तनावपूर्ण दुनिया में विश्राम और जागरूकता के लिए समय प्रदान करता है। ध्यान करने से अस्थायी तनाव से राहत की अधिक संभावना होती है। ध्यान करने की विविधता से पता चलता है कि व्यक्ति या जीवनशैली के आधार पर हर व्यक्ति के लिए ध्यान की अलग-अलग शैली है। जो ध्यान करता है, उसका अभ्यास करने से शारीरिक स्वास्थ्य में सुधार होता है।

बाबा रामदेव ने कहा कि योगाभ्यास शरीर को स्वस्थ बनाता है, क्योंकि यह हमें

रोगों से लड़ने की शक्ति देता है। हृदय रोग, मधुमेह और अस्थमा जैसी कई अन्य बीमारियों के लिए योग की सलाह दी। योग रक्त शर्करा के स्तर को नियंत्रित करने में मदद करता है। दुनिया में अस्सी प्रतिशत आबादी मोटापे से ग्रस्त है। हालाँकि योग को अपनी जीवनशैली में शामिल करके हम मोटापे को नियंत्रित कर सकते हैं। योग करने से शरीर लचीला बनता है। यह हमारी मांसपेशियों को मजबूत करता है और शरीर से अतिरिक्त चर्बी को कम करता है।

मनीषी मुनि विनय कुमारजी 'आलोक' ने कहा कि ध्यान धर्म और योग की आत्मा है। लेकिन ध्यान से जो अलग है बुढ़ापे में उसे वह सारे भय बताते हैं, जो मृत्यु के भय से उपजते हैं। अंत काल में उसे अपना जीवन नष्ट ही जान पड़ता है। इसलिए ध्यान करना जरूरी है। ध्यान से ही हम

अपने मूल स्वरूप या कहे कि स्वयं को प्राप्त कर सकते हैं अर्थात् हम कहीं खो गए हैं। स्वयं को ढूँढने के लिए ध्यान ही एकमात्र विकल्प है।

मुनिश्री ने आगे कहा कि इंसानों पर ध्यान का प्रभाव लंबे समय तक रहता है। ये इंसानों के सोचने की तरीकों को भी प्रभावित करता है। जिससे नए विचार आते हैं। यदि आप योग को अपनी दिनचर्या में शामिल करते हैं तो आप तनाव मुक्त जीवन जी सकते हैं। आज हर दूसरा व्यक्ति तनाव में है जब हम योग करते हैं तो मांसपेशियों में मरोड़ और खिंचाव जैसी कई क्रियाएँ होती हैं। इससे हमारे शरीर की थकान दूर होती है और हम हमेशा तरोताजा महसूस करते हैं। यदि आप नियमित रूप से योग करते हैं तो आपके शरीर में ऊर्जा का संचार होगा।

संस्कारों को सुदृढ़ करने का विशिष्ट उपक्रम है ज्ञानशाला

उधना।

मुनि उदित कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, उधना में तेरापंथ महासभा द्वारा संचालित ज्ञानशालाओं के आंचलिक संयोजक एवं सह-संयोजक का दिवसीय सम्मेलन प्रारंभ हुआ। इस अवसर पर मुनि उदित कुमार जी ने कहा कि आध्यात्मिक क्षेत्र में तेरापंथ की अनेक संस्थाएँ कार्यरत हैं। अनेक प्रकार के उपक्रम संचालित हो रहे हैं। उसमें दो उपक्रम अत्यंत महत्वपूर्ण हैं—उपासक श्रेणी और ज्ञानशाला। उपासक श्रेणी के उपासक मुख्य रूप से पर्युषण आराधना करवाने हेतु ऐसे क्षेत्रों में जाते हैं जहाँ धर्मसंघ के साधु-साध्वी पहुँच नहीं पाते। ज्ञानशाला का उपक्रम एक ऐसा उपक्रम है जो 9२ महीनों तक चलता रहता है। देश भर में लगभग ५७० ज्ञानशालाएँ चल रही हैं एवं उसमें लगभग ५००० प्रशिक्षिकाएँ अपनी सेवाएँ दे रही हैं।

मुनिश्री ने आगे कहा कि ज्ञानशाला बच्चों की निर्माण शाला है। इसके द्वारा बच्चों में संस्कारों का बीजारोपण किया जाता है। इतना ही नहीं उनके आध्यात्मिक संस्कारों को सुदृढ़ बनाने का भी प्रशिक्षण दिया जाता है। ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाएँ बालकों को नियमित प्रशिक्षण देती हैं। विशेष कार्यक्रमों के लिए ट्रेनिंग भी देती हैं और भावी प्रवृत्तियों का आयोजन भी करती हैं। ज्ञानशाला ऐसा उपक्रम है जिसके द्वारा भविष्य में अच्छे श्रावकों की सुंदर पीढ़ी तैयार की जा सकती है।

ज्ञानशाला के राष्ट्रीय शिविर प्राध्यापक

डालिमचंद नौलखा ने कहा कि भगवान महावीर ने मुक्ति के चार मार्ग बताए हैं—ज्ञान, दर्शन, चरित्र और तप। इनमें प्रथम स्थान है ज्ञान का। ज्ञान शून्य जीवन का कोई मूल्य नहीं है। ज्ञानशाला बाल्यावस्था से ही यथार्थ का ज्ञान देने वाला उपक्रम है। ज्ञानशाला के राष्ट्रीय संयोजक सोहन चोपड़ा ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। उपासक प्राध्यापक निर्मल नौलखा ने उपयोगी मार्गदर्शन दिया। ज्ञानशाला के गुजरात के संयोजक प्रवीण मेड़तवाल उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन तेरापंथी सभा के मंत्री सुरेश चपलोट ने किया।

◆ जिसे तुम अपना मित्र बनाते हो, उसके साथ सच्चा हार्दिक संबंध कायम करो। परस्पर एक-दूसरे का हित करने का संकल्प करो।

— आचार्यश्री महाश्रमण

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

नूतन गृह प्रवेश

थाईलैंड।

जयपुर निवासी, बैंकॉक, थाईलैंड प्रवासी निवोद सेठिया के सुपुत्र मनीष सेठिया एवं अंजु सेठिया के नूतन गृह प्रवेश के कार्यक्रम का आयोजन जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक कमलेश चोपड़ा ने विधि-विधान एवं मंगल मंत्रोच्चार से कार्यक्रम संपन्न करवाया।

परिषद द्वारा सेठिया परिवार को मंगलभावना पत्र भेंट किया गया। आभार ज्ञापन कमलेश चोपड़ा ने किया। कार्यक्रम का समापन मंगलपाठ से किया गया।

अमराईवाड़ी-ओढ़व।

बोरियापुरा निवासी, अहमदाबाद प्रवासी कैलाश बाफना का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक पंकज डांगी, दिनेश टुकलिया और विकास डांगी ने संपूर्ण विधि-विधान व मंगल मंत्रोच्चार से संपन्न करवाया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के संगान से हुई।

बाफना परिवार के सभी सदस्यों ने संस्कारकद्वय के साथ सुमधुर गीत का संगान किया। संस्कारक टीम की ओर से मंगलभावना यंत्र की भेंट की गई। बाफना परिवार ने संस्कारकद्वय के प्रति आभार व्यक्त किया।

गंगाशहर।

बीकानेर निवासी नीलू-चंद्रकुमार कोचर के नूतन गृह का प्रवेश जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक भरत गोलछा व विनीत बोथरा ने विधि-विधानपूर्वक मांगलिक मंत्रोच्चार के साथ संपन्न करवाया।

इस अवसर पर समाज व परिवार के सदस्यों की उपस्थिति रही। मंगलपाठ के साथ कार्यक्रम परिसंपन्न हुआ।

साउथ हावड़ा।

सरदारशहर निवासी, साउथ हावड़ा प्रवासी जितेंद्र-नीलम डागा के नूतन गृह का प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक मनोज कोचर एवं बिरेंद्र बोहरा ने मंत्रोच्चार द्वारा संपादित करवाया।

कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के संगान से हुआ। संस्कारकों ने पारिवारिक जनों को मंगलभावना पत्र भेंट किया गया। कार्यक्रम में तेयुप के मंत्री अमित बेगवानी की उपस्थिति रही। संयोजक अजीत दुगड़ ने सभी का आभार व्यक्त किया। परिवारजनों ने परिषद के प्रति आभार ज्ञापन किया।

अहमदाबाद।

छोटालाल चोपड़ा के नूतन गृह का प्रवेश जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक बाबूलाल चोपड़ा एवं वैभव कोठारी ने मांगलिक मंत्रोच्चार द्वारा संपादित करवाया।

कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई। संस्कारकों द्वारा मंगलभावना पत्र भेंट किया गया। चोपड़ा परिवार की ओर से संस्कारकों एवं तेयुप के प्रति आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम में समाज के गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही।

अमराईवाड़ी-ओढ़व।

कांकोली निवासी, अहमदाबाद प्रवासी प्रवीण पगारिया का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक पंकज डांगी, दिनेश टुकलिया ने विधि-विधानपूर्वक व मंत्रोच्चार द्वारा संपन्न करवाया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई।

संस्कारक टीम की ओर से मंगलभावना यंत्र की भेंट की गई। पगारिया परिवार ने संस्कारकद्वय के प्रति आभार व्यक्त किया।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

हनुमंतनगर।

महेंद्र अंकित अनमोल सिंघवी के नवीन प्रतिष्ठान का शुभारंभ मुख्य संस्कारक सज्जनराज कटारिया और सह-संस्कारक राहुल मेहता ने पूरे विधि-विधान एवं मंगल मंत्रोच्चार से कार्यक्रम संपादित करवाया।

इस अवसर पर तेयुप अध्यक्ष अंकुश बैद ने शुभकामनाएँ प्रेषित कीं। महेंद्र सिंघवी ने परिषद और संस्कारकों के प्रति आभार व्यक्त किया। परिषद द्वारा मंगलभावना पात्रक भेंट किया गया।



उपासना

(भाग - एक)

□ आचार्य महाश्रमण □



वाणी-संयम

वाणी का प्रयोग

सत्य वचन, हितकर वचन, प्रिय वचन—यह वाणी का सम्यक् प्रयोग है। हम मौन के द्वारा वाणी का सम्यक् प्रयोग करना सीखें। जो जड़ पदार्थ हैं, वे क्या कभी बोलते हैं? क्या यह उनकी साधना है? साधना यह है—वाणी का जो विकास हुआ है उसका हम सम्यक् प्रयोग करें, संयममय उपयोग करें। मैं यह नहीं सोचता—वाणी की जो शक्ति मनुष्य को मिली है, वह उसका उपयोग न करे। मनुष्य को बोलने की दुर्लभ शक्ति मिली है। वह न वनस्पति जगत् को प्राप्त है और न पशु-पक्षी जगत् को प्राप्त है। किसी भी पशु-पक्षी को लें, उनकी भाषा के शब्द बहुत सीमित हैं। वैज्ञानिकों ने परीक्षण के बाद यह पाया—बंदरों की भाषा में छह या सात शब्द हैं। किसी पक्षी की भाषा में तीन शब्द हैं, किसी की भाषा में पाँच शब्द हैं। इसका अर्थ है—पशु-पक्षियों का कोई शब्दकोश बनता ही नहीं है। मनुष्य ही ऐसा प्राणी है जिसने समर्थ शब्दकोश का निर्माण किया है। उसके शब्दकोश में हजारों नहीं, लाखों-लाखों शब्दों का विकास हुआ है। इतनी समृद्ध भाषा है। क्या हम मौन रहकर भाषा के विकास को रोक दें? यह कभी वांछनीय नहीं है। बोलना जरूरी है किंतु सम्यक् बोलना, संयमपूर्वक बोलना उससे ज्यादा जरूरी है। यदि वाक् संयम हो तो अनेक समस्याएँ समाहित हो जाएँ।

वाणी का विवेक

अधिकांश समस्याओं का हेतु है वाणी का संयम। आदमी जितना बोलकर बिगाड़ता है, उतना करके नहीं बिगाड़ता। संयत भाषा का प्रयोग कभी समस्या नहीं बनता। कषाय की छलनी से छनकर जो भाषा आती है, वह भाषा न बोलें। कषायमुक्त भाषा बोलें। इस एक सूत्र में वाणी का विवेक समाविष्ट हो जाता है। भगवान् महावीर ने वाणी के विवेक के लिए स्वतंत्र अध्यायों की रचना की। कैसे बोलना चाहिए? कब बोलना चाहिए? इन सबको विवेक दिया।

शिष्ट समाज की पहचान का बहुत बड़ा साधन है—वाणी का विवेक। शिष्ट व्यक्ति और शिष्ट समाज की भाषा अलग प्रकार की होगी, उसमें गालियों की बौछार नहीं होगी। कुछ व्यक्ति जब आक्रोश में होते हैं, गालियों की झड़ी लगा देते हैं। गाली का एक छोटा-सा शब्दकोश बन जाता है। कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं, जो लड़ते हैं तो भी शिष्ट शब्दों का प्रयोग करते हैं। मीठी और ऊँची भाषा का प्रयोग व्यक्तित्व की विशिष्टता का परिचायक है। प्रसिद्ध कहावत बन गई—‘बोल्या क लाध्या।’ व्यक्ति कैसा है, इसके लिए बहुत गहराई में जाने की जरूरत नहीं है। उससे पाँच मिनट वार्तालाप करो, पता चल जाएगा कि आदमी कैसा है? यह एक महत्त्वपूर्ण कोण है, जिससे वाणी संयम का मूल्य समझा जा सकता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि मौन व्यर्थ है। मौन की सार्थकता है, पर उसका मूल्य सापेक्ष है, निरपेक्ष नहीं। वह मौन सार्थक है, जिसमें व्यक्ति स्वस्थ और शांत रहे।

बहू का ध्यान रसोई में था। कुत्ता आया और रोटियाँ लेकर भाग गया। सास मौन में बैठी थी। उसने कुत्ते को रोटी ले जाते देखा था। उससे रहा नहीं गया। सास ने हाथ में लाठी लेकर पीटना शुरू कर दिया। बहू ने पीछे देखा—सास ने इशारा करते हुए कहा—देखो! कुत्ता रोटियाँ लेकर भाग रहा है।

मौन का विकल्प

हम भाषा से समझाएँ या अभाषा से समझाएँ। श्रुत ज्ञान के दोनों प्रकार हैं—अक्षर श्रुत और अनक्षर श्रुत। व्यक्ति इशारे से वह काम कर सकता है, जो कभी-कभी बोलने से भी नहीं होता। मौन वह है, जिसमें न संकेत है, न इशारा है और न हुंकार है। ऐसा मौन यदि एक घंटे भी किया जाता है तो वह बहुत मूल्यवान् है। यदि ऐसा मौन नहीं होता है तो वह मात्र एक ढर्रा, रूढ़ि या परंपरा मात्र है। उस मौन में हमने भाषा वर्गणा के पुद्गलों को ग्रहण नहीं किया, उन्हें विश्राम दे दिया। उन पर यह कृपा की पर अपने पर अनुकंपा नहीं की। हम भाषा वर्गणा के पुद्गलों पर भी पूरी अनुकंपा नहीं कर पाते। जो कुछ मौन में चल रहा है उसमें भाषा का भी योग होता है। मौन का हृदय है, स्वरयंत्र का शिथिलीकरण। स्वर यंत्र के शिथिलीकरण की प्रक्रिया को समझकर मौन करें तो मौन का आनंद आएगा। मैं इस बात पर बल देता हूँ—एक घंटे का मौन भी हो तो ऐसा हो कि उसका प्रभाव पूरे दिन अनुभव हो। इसका तात्पर्य है शेष तेईस घंटों में न कटु वचन का प्रयोग हो, न अप्रिय वचन का प्रयोग, न अपमान और सताने वाली भाषा का प्रयोग। दिन भर शांत भाव से बोलें, तौल-तौल कर बोलें तो मानना होगा कि एक घंटे का मौन पूरे दिन का मौन हो गया। मौन का सम्यक् विकल्प है वाक् संयम।

परोपकार : दो मार्ग

वाणी के परिष्कार के दो मार्ग हैं। एक है निश्चय नय का ज्ञान और दूसरा है प्रशिक्षण। जिस व्यक्ति में निश्चय नय की धारणा मजबूत होती है वह आग्रहपूर्ण, अन्यायपूर्ण और कटुवचन का प्रयोग नहीं करेगा। जिसे सम्यक् वाणी के प्रयोग का प्रशिक्षण मिल जाए, वह अपनी भाषा का परिष्कार कर सकता है। निश्चय की चेतना जागे, प्रशिक्षण की प्रक्रिया से गुजरे, भाषा के परिष्कार की चाबी स्वयमेव हाथ लग जाएगी।

जप

व्यक्ति बदलना चाहता है। बदलाव का एक सूत्र है—नादयोग का प्रयोग। एक शब्द की आवृत्ति करना, उसे बार-बार दोहराना। व्यक्ति जो बनना चाहता है, उसे सामने रखकर उसकी स्मृति दिलाए, ऐसे शब्द को दोहराना। उस शब्द का नाम बन गया मंत्र। जप का अर्थ है—मंत्र की पुनरावृत्ति।

वैदिक परंपरा को देखें, जैन अथवा बौद्ध परंपरा को देखें, लौकिक परंपराओं को देखें, सबने मंत्रों का चुनाव किया है। भारतीय दर्शनों में मंत्र का बहुत विकास हुआ है और वह इसलिए हुआ है कि उससे कुछ उपलब्धियाँ अर्जित कर सकें।

देवाराधना

जप क्यों करें, जप का उद्देश्य क्या है? यह प्रश्न व्यक्ति के मानस में स्फुरित होता है। एक उद्देश्य बतलाया गया—देवाराधना। एक ऐसी शक्ति की आराधना करना, जिस शक्ति के द्वारा परिवर्तन हो सके, जो कामना है, वह पूरी हो सके।

जैन साहित्य का प्रसंग है। सम्राट् श्रेणिक ने महामात्य अभयकुमार से कहा—महारानी को एक दोहद पैदा हुआ है। गर्भावस्था में उत्पन्न होने वाली एक गहरी आकांक्षा को दोहद कहा जाता है। वह दोहद है—अकाल में वर्षा। यह पूरा कैसा हो सकता है? वर्षा ऋतु नहीं है। असमय में वर्षा कैसे हो सकती है? अभयकुमार सम्राट् को आश्वस्थ कर अपनी पौधशाला में चला गया। तीन दिन के उपवास का संकल्प लेकर मंत्र-जप में लीन हो गया। मित्र देवता का स्मरण सतत चलता रहा। मंत्र की सतत स्मृति सफल हो गई। देवता प्रस्तुत हो गया। उसने अभयकुमार से पूछा—मुझे क्यों याद किया? अभयकुमार ने कहा—असमय में वर्षा करनी है। देवता बहुत शक्तिसंपन्न था। असमय में वर्षा कर दी। प्रयोजन सिद्ध हो गया।

कार्यसिद्धि के लिए, विशेष प्रकार की आकांक्षा की पूर्ति के लिए देवता की आराधना की जाती है। देवता की आराधना में जप का प्रयोग मुख्य होता है, साथ में तप का प्रयोग भी चलता है।

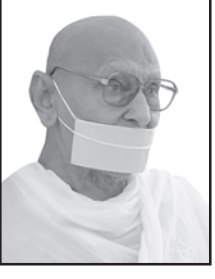
विघ्न-निवारण

जप का एक प्रयोजन है—विघ्न-निवारण। जीवन में बहुत सारी विघ्न-बाधाएँ आती रहती हैं। मनुष्य अपनी शक्ति के अनुसार उनका निराकरण करता है। कुछ ऐसी बाधाएँ भी आती हैं, जहाँ मानवीय शक्ति काम नहीं करती। वहाँ वह मंत्रशक्ति का प्रयोग करता है। ध्वनि प्रकंपनों में बहुत शक्ति होती है। विज्ञान से परिचित लोग इस सच्चाई को जानते हैं। पहले हीरा हीरे को काटता था लेकिन आज उसे काटने के लिए लेशर किरण का प्रयोग होता है, पराध्वनि का प्रयोग होता है। ध्वनि से वे कार्य होते हैं, जो असंभव माने जाते रहे हैं। ध्वनि तरंग के साथ भावना जुड़ जाती है तो वह अधिक शक्तिशाली बन जाती है। जहाँ भी विघ्न आता है, विघ्न-निवारण के लिए मंत्रों का निर्धारण हुआ। राहु की दशा है तो अमुक मंत्र का जप करें। शनि की साढ़े साती चल रही है तो अमुक मंत्र का प्रयोग करें। इस आधार पर अनेक लोगों ने अपनी समस्या का निवारण किया है। अनेक प्रकार के विघ्न होते हैं और उन विघ्नों के निवारण के लिए अनेक प्रकार के मंत्र के प्रयोग हैं।

आत्माराधना

जप का एक प्रयोजन है—आत्माराधना। आत्मा की आराधना के लिए मंत्र का प्रयोग होता है। एक मंत्र ले लिया और आत्मा के साथ तादात्म्य स्थापित कर लिया। वह मंत्र चलेगा, आत्मा की स्मृति होती रहेगी।

जप, धारण और भावना—इन तीन शब्दों का प्रयोग होता रहा है। ये तीनों लगभग एक कोटि में आ जाते हैं। चार प्रकार की धारणाएँ हैं—पार्थिवी धारणा, आग्नेयी धारणा, जलीय धारणा और वायवीय धारणा। इन धारणाओं का प्रयोग बहुत परिवर्तन लाने में समर्थ है। भावना भी जप का एक प्रकार है। जप, धारणा और भावना—ये सब स्वाध्याय के प्रकार बन जाते हैं। इनका उद्देश्य है—आत्मा के साथ तादात्म्य स्थापित करना। व्यक्ति के सामने एक ध्येय होता है कि मुझे ऐसा बनना है। उस ध्येय के साथ तादात्म्य अथवा एकात्मकता स्थापित होती है, तब व्यक्ति बदल सकता है। परिणमन निरंतर होता रहता है। यदि परिणमन न हो तो रूपांतरण नहीं हो सकता, परिवर्तन नहीं हो सकता। कहा गया—आत्मा की आराधना के लिए अर्हत् का जप करो। अर्हत् के जप का अर्थ है—अर्हत् की स्मृति। जब यह अर्हत् की भावना प्रखर होती है, व्यक्ति के भीतर छिपा अर्हत् प्रकट होने लग जाता है। वह अर्हत् जिसे अपना ध्येय नहीं बनाया है, व्यक्ति को अर्हत् नहीं बनाता है किंतु अर्हत् की स्मृति का योग पाकर व्यक्ति स्वयं अर्हत् रूप में प्रकट होना शुरू हो जाता है। परिवर्तन के लिए जरूरी है तन्मय होना। केवल पढ़ने अथवा सिद्धांत जानने मात्र से परिवर्तन संभव नहीं है।



संबोधि

□ आचार्य महाप्रज्ञ □

बंध-मोक्षवाद

ज्ञेय-हेय-उपादेय

भगवान् प्राह

(३६) अशुभे न रतिं याति, विपाकं परिचिन्तयन्।
वैविध्यं जगतो दृष्ट्वा, नासक्तिं भजते पुमान्॥

कर्म-विपाक का एकाग्र चिंतन करने वाला मनुष्य अशुभ कार्य में रति-आनंद का अनुभव नहीं करता। यह विपाकविचय का फल है। जगत् की विचित्रता को देखकर मनुष्य संसार में आसक्त नहीं बनता, यह संस्थान-विचय का फल है।

(४०) विशुद्धं जायते चित्तं, लेश्यापि विशुद्धयते।
अतीन्द्रियं भवेत् सौख्यं, धर्म्यध्यानेन देहिनाम्॥

धर्म्यध्यान के द्वारा प्राणियों का चित्त शुद्ध होता है, लेश्या विशुद्ध होती है और अतीन्द्रिय-आत्मिक सुख की उपलब्धि होती है।

(४१) विजहाति शरीरं यो, धर्म्यचिन्तनपूर्वकम्।
अनासक्तः स प्राप्नोति, स्वर्गं गतिमनुत्तराम्॥

जो धर्म्य-चिन्तनपूर्वक शरीर को छोड़ता है, वह अनासक्त व्यक्ति स्वर्ग और क्रमशः अनुत्तरगति-मोक्ष को प्राप्त होता है।

ध्याता के लिए प्रारंभिक अवस्था में धर्म्य-ध्यान ही उपयुक्त है। धर्म चित्त-शुद्धि का केंद्र है। राग-द्वेष व मोह आदि चित्त-अशुद्धि के मूल हैं। इनसे आत्मा बंधती है। मुक्ति के लिए वीतरागता अपेक्षित है। वीतराग व्यक्ति इंद्रिय-सुखों में आसक्त नहीं होता। उसके सामने आत्म-सुख है, वह इंद्रियों से गहब नहीं होता। वीतरागता आत्म-धर्म है। अतः उससे होने वाला सुख भी आत्म-सुख या अतीन्द्रिय आनंद है। धर्म्य-ध्यान से केवल चेतन का ही शोधन नहीं होता, अवचेतन मन के संस्कार भी मिटाए जाते हैं। अवचेतन मन की शुद्धि ही वास्तविक शुद्धि है। चेतन की अशुद्धि का मूल यह अवचेतन मन ही है। ध्यान हमारे मन की गहरी तहों में घुसकर समस्त मलों का प्रक्षालन कर देता है। समता-स्रोत सबके लिए समान प्रवाहित हो जाता है। संसार में न कोई शत्रु रहता है और न कोई मित्र। अहिंसा का द्वार हमेशा के लिए खुल जाता है। इस दशा में शरीर छोड़ने वाले साधक के लिए स्वर्ग और अपसर्ग के सिवाय कोई मार्ग नहीं होता।

- (१) आज्ञाविचय—आगम के अनुसार सूक्ष्म पदार्थों का चिंतन करना।
- (२) अपायविचय—हेय क्या है, इसका चिंतन करना।
- (३) विपाकविचय—हेय के परिणामों का चिंतन करना।
- (४) संस्थानविचय—लोक या पदार्थों की आकृतियों, स्वरूपों का चिंतन करना।

आज्ञा, अपाय, विपाक और संस्थान—ये ध्येय हैं। जैसे स्थूल या सूक्ष्म आलंबन पर चित्त एकाग्र किया जाता है, वैसे ही इन ध्येय-विषयों पर चित्त को एकाग्र किया जाता है। इनके चिंतन से चित्त-निरोध होता है, चित्त की शुद्धि होती है, इसलिए इनका चिंतन धर्म्य-ध्यान कहलाता है।

आज्ञाविचय से वीतराग-भाव की प्राप्ति होती है। अपायविचय से राग, द्वेष, मोह और उनसे

उत्पन्न होने वाले दुःखों से मुक्ति मिलती है। विपाकविचय से दुःख कैसे होता है? क्यों होता है? किस प्रवृत्ति का क्या परिणाम होता है—इनकी जानकारी प्राप्त होती है। संस्थान-विचय से मन अनासक्त बनता है, विश्व की उत्पाद, व्यय और ध्रुवता जान ली जाती है, उसके विविध परिणाम-परिवर्तन जान लिए जाते हैं, तब मनुष्य स्नेह, घृणा, हास्य, शोक आदि विकारों से विरत हो जाता है।

(४२) अप्युत्तमसंहननवतां पूर्वविदां भवेत्।
शुक्लस्य द्वयमाद्यन्तु, स्याच्च केवलिनोऽन्तिमम्॥

शुक्लध्यान के प्रथम दो भेद 'पृथक्त्व-वितर्क-सविचार तथा एकत्व-वितर्क-अविचार' उत्तम संहनन वाले तथा पूर्वधरों में पाए जाते हैं। शेष दो भेद केवलज्ञानी में पाए जाते हैं।

(४३) सूक्ष्मक्रियोऽप्रतिपाती, समुच्छिन्नक्रियस्तथा।
क्षपयित्वा हि कर्माणि, क्षणेनैव विमुच्यते॥

सूक्ष्मक्रिय-अप्रतिपाती और समुच्छिन्नक्रिय-शुक्लध्यान के इन दो अंतिम भेदों में वर्तमान केवली कर्मों का क्षय कर क्षणभर में मुक्त हो जाता है।

शुक्लध्यान के चार प्रकार हैं—

(१) पृथक्त्व-विचार-सविचार—एक द्रव्य के अनेक पर्यायों का चिंतन करना। इसमें ध्येय का परिवर्तन होता रहता है।

(२) एकत्व-वितर्क-अविचार—एक द्रव्य के एक पर्याय का चिंतन करना। इसमें ध्येय का परिवर्तन नहीं होता।

(३) सूक्ष्म-क्रिय-अप्रतिपाती—तेरहवें गुणस्थान के अंत में होने वाला ध्यान। इसकी प्राप्ति के बाद ध्यानावस्था का पतन नहीं होता।

(४) समुच्छिन्न-क्रिय-अनिवृत्ति—अयोगावस्था में होने वाला ध्यान। इसकी निवृत्ति नहीं होती। अंतिम दो भेद केवलज्ञानी में ही पाए जाते हैं।

(४४) अन्तर्मुहूर्त्तमात्रञ्च, चित्तमेवात्र तिष्ठति।
छद्मस्थानां ततश्चित्तं, वस्त्वन्तरेषु गच्छति॥

छद्मस्थ का चित्त एक विषय में अंतर्मुहूर्त्त तक ही स्थिर रहता है, फिर वह दूसरे विषय में चला जाता है।

(४५) स्थितात्मा भवति ध्याता, ध्यानमैकाग्रयमुच्यते।
ध्येय आत्मा विशुद्धात्मा, समाधिः फलमुच्यते॥

ध्यान के चार अंग हैं—ध्याता, ध्यान, ध्येय और समाधि। जिसकी आत्मा स्थित होती है, वह ध्याता-ध्यान करने वाला होता है। मन की एकाग्रता को ध्यान कहा जाता है। विशुद्ध आत्मा-परमात्मा ध्येय है और उसका फल है—समाधि।

(क्रमशः)

अवबोध

□ मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनू' □

कर्म बोध

बंध व विविध

प्रश्न २६ : क्या वीतराग के कर्म बंध होता है?

उत्तर : वीतराग के कर्म बंध होता भी है, नहीं भी। तेरहवें गुणस्थान तक निरंतर कर्म का बंध होता है, चौदहवें गुणस्थान में कर्म बंध का नितांत अभाव रहता है। कर्म बंध के दो प्रकार हैं—(१) सांपरायिक बंध, (२) ईर्यापथिक बंध।

जो सकषायी हैं उनके सांपरायिक क्रिया से बंध होता है। कषाय व योग की चंचलता सांपरायिक क्रिया का मुख्य हेतु है। दसवें गुणस्थान तक कषाय की विद्यमानता से इस क्रिया से बंध होता है। इसकी स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त्त उत्कृष्ट ७० करोड़करोड़ सागरोपम है। ईर्यापथिक का अर्थ है—योग। जहाँ मात्र योग की चंचलता होती है, वहाँ ईर्यापथिक बंध होता है। यह पुण्य का बंधन है। इसकी स्थिति दो समय की है। यह ईर्यापथिक बंध

केवल वीतराग के होता है।

प्रश्न २७ : क्या अंतराल गति में कर्म बंध होता है?

उत्तर : अंतराल गति में कर्म बंध होता है। वहाँ भी मिथ्यात्व, अत्रत, कषाय आदि की क्रिया चालू है। उनसे निरंतर कर्म बंध होता है।

प्रश्न २८ : अंतराल गति में स्थूल शरीर नहीं होता, स्थूल योग नहीं रहता, फिर कर्म बंध कैसे व किसके होता है?

उत्तर : अंतराल गति दो प्रकार की होती है—(१) ऋजु गति, (२) वक्र गति। अंतराल गति में स्थूल शरीर तो नहीं होता, योगजन्य प्रवाह (धक्का) रहता है। वक्र गति में कार्मण काययोग की चंचलता रहती है। अत्रत व कषाय जीव के साथ अंतरालगति में भी विद्यमान रहते हैं। कर्म पुद्गलों को आकर्षित करने के लिए तो इतना काफी है। कर्मों का बंधन सर्वदा कार्मण शरीर के ही होता है। वह वहाँ मौजूद रहता है।

(क्रमशः)



अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट जिला स्तरीय प्रतियोगिता का आयोजन

दिल्ली।

अणुव्रत समिति ट्रस्ट द्वारा जिला स्तरीय अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट का आयोजन साध्वी डॉ० कुंदनरेखा जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, छतरपुर, महारौली में आयोजित किया गया। जहाँ पर दिल्ली के विभिन्न जिलों से ४५ विद्यालयों के ३७५ विद्यार्थियों ने प्रतियोगिताओं में भाग लिया। प्रतियोगिताओं को तेरापंथ भवन परिसर के अलग-अलग भवनों में आयोजित कराया गया। विद्यालयों का पंजीकरण करा गया। साध्वीश्री जी के मंगलपाठ के पश्चात प्रतियोगिताएँ आरंभ हुई। प्रतियोगिताओं में तेजकरण सुराना, पूर्व अध्यक्ष अशोक संचेती, प्रदीप संचेती, डॉ० अनिल दत्त मिश्रा, सुनीता जैन, सरोज जैन, सुरेश जैन, विमल गुनेचा, ललित श्यामसुखा, दीपिका छल्लानी, राजेश जैन, किरण, विपिन ने निर्णायक की भूमिका निभाई।

लगभग ३ घंटे से ज्यादा चली प्रतियोगिता के बाद एक मंचीय कार्यक्रम का आयोजन हुआ। जिसमें मुख्य अतिथि उपशिक्षा निदेशक, साउथ दिल्ली से अशोक त्यागी की उपस्थिति रही। साध्वीश्री जी ने कहा कि किस तरह हम अणुव्रत के संकल्पों

को अपने जीवन में उतारकर अपने जीवन को सुव्यवस्थित बनाकर अपने जीवन में शिखर पर चढ़ सकते हैं। साध्वीश्रीजी ने दिल्ली समिति की प्रशंसा करते हुए कहा कि दिल्ली समिति अणुव्रत को जाग्रत और इसके प्रचार-प्रसार का महत्वपूर्ण कार्य कर रही है।

अणुव्रत समिति ट्रस्ट दिल्ली के कार्यकर्ताओं द्वारा अणुव्रत गीत के संगान के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। दिल्ली समिति के अध्यक्ष मनोज बरमेचा ने आए हुए सभी गणमान्य सदस्यों का स्वागत तथा आभार व्यक्त किया। अशोक त्यागी ने भी शिक्षक तथा विद्यार्थियों को कहा कि अणुव्रत बच्चों में नैतिकता का जागरण करती है इसलिए ऐसे कार्यक्रमों में भाग लेना चाहिए। अणुविभा के मुख्य ट्रस्टी तेजकरण सुराना ने भी प्रतियोगिता से कैसे आगे बढ़ने का अवसर मिलता है इस पर जोर दिया। अणुविभा के पूर्व अध्यक्ष अशोक संचेती ने कहा कि हमें असली आजादी के महत्त्व को समझना है। दिल्ली कॉन्टेस्ट संयोजक चंद्र कोठारी ने सभी को जानकारी दी कि कैसे हमारे साथ ८३ विद्यालय पंजीकृत हुए। विद्यालय स्तर पर जब आयोजन हुए तब

६३ विद्यालय ने अपनी एक्सेल शीट हमें प्रदान करवाई। जिला स्तर ४५ विद्यालयों ने इस आयोजन में अपनी सहभागिता दर्ज कराई। यहाँ से आगे राज्य स्तर के लिए चयनित विद्यार्थियों की प्रतियोगिता होगी, उसकी सूचना प्रेषित कर दी जाएगी। जो भी बच्चे विद्यालय लेवल पर प्रथम आए थे तथा जितने भी प्रधानाचार्य, शिक्षकगण आयोजन में पधारे सभी को सम्मानित किया गया।

सभी गणमान्य अतिथियों का सम्मान समिति के पदाधिकारियों व समिति के कार्यकर्ताओं द्वारा किया गया। साध्वीश्री के प्रति कृतज्ञता तथा सभी के प्रति आभार ज्ञापन समिति के मंत्री राजेश बैंगानी ने किया। कार्यक्रम का संचालन प्रदीप संचेती ने किया। अणुव्रत के नियम अपने जीवन में उतारें और उनका संकल्प लें इसके लिए अणुव्रत समिति ने एक सिग्नेचर वाला क्रिएट करवाई। संकल्प करते हुए आए हुए सभी व्यक्तियों ने अपने सिग्नेचर वाला पर किए। दिल्ली समिति के निवर्तमान अध्यक्ष शांतिलाल पटवारी के मार्गदर्शन से व समिति के कार्यकर्ताओं के श्रम से ही कार्यक्रम का सफल आयोजन हुआ।

अणुविभा प्रकल्प किडजोन बना बच्चों के आकर्षण का केंद्र

नंदनवन, मुंबई।

अणुव्रत अनुशासता आचार्यश्री महाश्रमण जी के चातुर्मास प्रवास स्थल, मुंबई में अणुविभा के प्रकल्प किडजोन आगंतुकों के लिए आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। चातुर्मास काल में खेल-खेल में पर्यावरण सुरक्षा, नैतिकता, जीवन विज्ञान एवं बच्चों के चारित्रिक उत्थान हेतु प्रतिदिन प्रशिक्षण व साप्ताहिक कार्यशालाओं के माध्यम से व्यक्तित्व विकास का अनुपम प्रयोग निरंतर जारी है। महात्मा गांधी जयंती, स्वतंत्रता दिवस, रक्षाबंधन आदि विविध अवसरों पर नंदनवन परिसर में पर्यावरण जागरूकता की रैली-विविध प्रस्तुतियाँ-अनेकता में एकता, स्वतंत्रता वीरों की जीवनी व नुक्कड़ नाटक के माध्यम से बच्चों ने समाज में हो रही दुष्प्रभावों को लोगों को बड़े रोचक ढंग से बताया।

गुरुदेव ने महती कृपा कर बच्चों की प्रस्तुति को बड़े गौर से देखा और आशीष प्रदान करते हुए फरमाया कि मुंबई की यह किडजोन पिछले अनेक किडजोन की अपेक्षा विशाल और ज्यादा उपयोगी लग रहा है। अणुविभा के अध्यक्ष अविनाश नाहर, महामंत्री भीखम सुराणा किडजोन केंद्रीय प्रभारी विनोद कोठारी के मार्गदर्शन में किडजोन सुचारु रूप से संचालित हो रहा है।

किडजोन में अनेकों साधु-साध्वियों का सान्निध्य और प्रेरणा भी निरंतर मिल रही है। राजस्थान विधानसभा की विधायक दीप्ति महेश्वरी, असम राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया, अनेक स्थानीय विधायक, नगरसेवक, अनेक संस्थाओं के शीर्षस्थ पदाधिकारियों ने भी किडजोन का अवलोकन किया। किडजोन की मुंबई संयोजिका सुमन चपलोट एवं सह-संयोजिका मीना बड़ाला के निर्देशन एवं अणुव्रत समिति, मुंबई के सहयोग से किडजोन में हर रोज अच्छी संख्या में बच्चों की उपस्थिति हो रही है। जहाँ बच्चों को नैतिक मूल्यों पर आधारित शॉर्ट मूवीज दिखाकर मोबाइल एडिक्शन से बचें, झूठ न बोलने जैसी प्रेरणा दी जाती है।

प्रत्येक रविवार को किडजोन में लगभग १५० बच्चों की उपस्थिति रहती है। हर रविवार को बच्चों के लिए जुंबा, डांस, ड्राइंग, गरबा जैसे अलग-अलग वर्कशॉप का आयोजन भी किया जाता है। अब तक लगभग ४५०० बच्चे और लगभग १६०० अभिभावकगण यहाँ आ चुके हैं।

ईको फ्रेंडली फेस्टिवल

जसोल।

अणुविभा के तत्वावधान में देश के विभिन्न शहरों में अणुव्रत समितियों के माध्यम से इस वर्ष भी ईको फ्रेंडली फेस्टिवल मनाने का व्यापक अभियान चलाया जा रहा है। अणुविभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अविनाश नाहर ने देश भर में हजारों अणुव्रत कार्यकर्ताओं से ईको फ्रेंडली फेस्टिवल मनाने का संदेश जन-जन तक पहुँचाने का आह्वान किया।

पर्यावरण जागरूकता अभियान की राष्ट्रीय संयोजिका डॉ० नीलम जैन ने बताया कि देश में सैकड़ों स्थानों पर अणुव्रत समितियाँ व अणुव्रत मंच हैं, जो देश में पर्यावरण जागरूकता अभियान, नशामुक्ति, सद्भावना, अहिंसा प्रशिक्षण, चुनाव शुद्धि जैसे विभिन्न मुद्दों पर जन अभियान चलाती है।

अणुव्रत समिति, जसोल अध्यक्ष पारसमल गोलेच्छा, मंत्री सफरुखान ने बताया कि अणुविभा एक वैश्विक संस्था है। अणुव्रत अनुशासता आचार्यश्री महाश्रमण जी के आध्यात्मिक मार्गदर्शन में अणुव्रत आंदोलन अहिंसक और शांतिप्रिय समाज की रचना के लिए समर्पित है। समिति प्रचार-प्रसार के दौरान, बैनर द्वारा जन-जागरण नुक्कड़ नाटक मंचन, वीडियो अपील के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण हमारा दायित्व आलेख लेखन एवं प्रकाशन सरीखे कई कार्यक्रम कर रही है।

नुक्कड़ नाटिका की प्रस्तुति

हैदराबाद।

अभातेमम द्वारा निर्देशित में तेमम के तत्वावधान में तेरापंथ कन्या मंडल द्वारा 'व्यसन को इन्कार, बनाएँ जीवन खुशहाल' नुक्कड़ नाटिका प्रस्तुत की गई। 'नशा नाश का द्वार है-जीवन का होता विनाश है' नाटिका की गई। गुटका, बीड़ी, सिगरेट, तंबाकू, शराब आदि के सेवन से मनुष्य अपना जीवन खोता जा रहा है। बुरी आदतों को ग्रहण करना बहुत आसान है, पर इससे पीछा छुड़ाना उतना ही कठिन। प्रार्थना सुराणा, पूर्वा सुराणा, लवीशा जैन, हिमांशी जैन, चबी जैन, जीविका जैन ने नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किया।

नवाहिनक आध्यात्मिक अनुष्ठान

साउथ कोलकाता।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में नवाहिनक आध्यात्मिक अनुष्ठान तेरापंथ भवन में परिसंपन्न हुआ। इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि दुनिया में शक्ति का बहुत बड़ा महत्त्व है, शक्ति के बिना व्यक्ति का मूल्य कम हो जाता है। शक्तिविहीन व्यक्ति पंगु के समान है। जिसके पास शक्ति नहीं होती है, उसको सब डराते हैं, वह स्वयं कायर होता है। अपने आपको दयनीय व असहाय भी अनुभव करता है। बाह्य शक्ति से आंतरिक शक्ति का अधिक मूल्य होता है। आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त होती है स्वाध्याय, जप, तप, ध्यान से।

आचार्यश्री तुलसी ने आध्यात्मिक अनुष्ठान का एक नया उपक्रम प्रारंभ किया। जिसका उद्देश्य है आत्म शुद्धि व ऊर्जा का विकास। मुनिश्री ने आगे कहा कि शक्ति जागृत करने का एक विशेष उपाय है-संकल्प शक्ति। संकल्प शक्ति से असंभव कार्य प्रतीत होने वाला भी संभव प्रतीत होने लग जाता है। आरोग्य, बोधि लाभ व श्रेष्ठ समाधि से व्यक्तित्व में निखार आता है। चैतन्य का विकास होता है। व्यक्ति हमेशा साधना के द्वारा जीवन को संवारता रहे। मुनि कुणाल कुमार जी ने गीत का संगान किया। मुनि परमानंद जी ने आध्यात्मिक अनुष्ठान कराया।

नवग्रह शांति एवं वृहद आर्यबिल अनुष्ठान का आयोजन

औरंगाबाद।

मुनि अर्हत कुमार जी के सान्निध्य में नवरात्रि के आठवें दिन आर्यबिल तप और नवग्रह अनुष्ठान करवाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुनि अर्हत कुमार जी ने नमस्कार महामंत्र के द्वारा किया। तत्पश्चात मुनिश्री द्वारा अनुष्ठान करवाया गया और जप के साथ तप का महत्त्व समझाया। आज व्यक्ति का जीवन अशांति और दुःख के बीच घुटता जा रहा है। जीवन को कई चीजें प्रभावित करती हैं उसमें एक है-ग्रह। जैन सूत्र में जिसका विस्तार से उल्लेख मिलता है। अनेक मंत्रों के द्वारा इसे अनुकूल बनाया जा सकता है। नमस्कार महामंत्र और तीर्थंकरों के विशेष जप से इसे शांति किया जा सकता है। मंत्र सुख, समृद्धि एवं शांति के प्रदायक हैं।

जैन धर्म में तप का बहुत महत्त्व है और इसके अनेक प्रकारों में से एक प्रकार है-आर्यबिल। आर्यबिल तप स्वाद विजय की अभूतपूर्व साधना है, इसकी साधना करने वालों के जीवन में आत्मोत्कर्ष बढ़ता है। आर्यबिल आत्मा को नव्यता, दिव्यता और भव्यता प्रदान करता है।

सभी समाज के गणमान्य व्यक्तियों के साथ ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने भी आर्यबिल तप में अपनी सहभागिता दर्ज करवाई। सामुहिक प्रत्याख्यान करवाया व मंगल पाठ श्रवण करवाया। तेरापंथ भवन में ही सामुहिक आर्यबिल करवाने की व्यवस्था की गई थी। जिसमें लगभग ७५ भाई-बहनों ने सामुहिक आर्यबिल किए। इस कार्यक्रम में तेरापंथी सभा, तेयुप और तेमम की टीम ने भी अपनी सहभागिता दर्ज करवाई।

नशामुक्ति अभियान

मदुरै।

अभातेमम द्वारा निर्देशित तेमम के तत्वावधान में कन्या मंडल द्वारा नाटक प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई। कन्याओं का उत्साह बढ़ाने और प्रोत्साहन प्रदान करने के लिए महिला मंडल की बहनें एवं ज्ञानशाला के बच्चे भी उपस्थित थे। कन्याओं ने 'छोड़ो, नशे को त्यागो तुम, होश में आओ जागो तुम' का संदेश दिया। नशे की लत में पड़े एक लड़के की कहानी दिखाते हुए सबको सीख दी गई।

नाट्य प्रस्तुति प्रतियोगिता में पहला स्थान मिला सिद्धि जीरावला, तनु लोढ़ा, कोमल जीरावला, विधि कोठारी को और दूसरा स्थान प्राप्त किया मुस्कान सुराणा, सोनू चोपड़ा, अविका चोपड़ा ने। कार्यक्रम का संचालन कन्या मंडल प्रभारी दीपिका फूलफगर ने किया।

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का आयोजन

छापर।

शासनश्री मुनि विजय कुमार जी के सान्निध्य में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह मनाया गया। प्रथम दिवस सांप्रदायिक सौहार्द दिवस के रूप में मनाया गया। मुनिश्री ने कहा कि भारत में अनगिनत संप्रदाय हैं, वे सब लोककल्याण व जीवन उत्थान की शिक्षा देते हैं। कोई भी संप्रदाय आपस में लड़ने की बात नहीं कहता। अणुव्रत मानवीय एकता में विश्वास करता है। भेद में अभेद, अनेकता में एकता की बता को महत्त्व देता है। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री तुलसी ने अणुव्रत के प्रवर्तन करने के साथ ही लंबी-लंबी यात्राएँ कीं, अनेक धर्माचार्यों से उनका मिलना हुआ। उन्होंने सर्वत्र सौहार्द और मैत्री का अनुभव किया। उनकी व्यापक विचारधारा के कारण ही विभिन्न धर्म-संप्रदायों के लोग उनके पास श्रद्धाभाव से आते थे।

दूसरा दिन अहिंसा दिवस' के रूप में मनाया गया। शासनश्री मुनि विजय कुमार जी ने कहा कि समस्त प्राणधारियों का जीवन अहिंसा पर टिका हुआ है। गृहस्थ व्यक्ति को बहुत सारे आरंभ के काम करने पड़ते हैं, जैसे-खेती करना, भोजन बनाना, व्यापार आदि। कोई झगड़ा करता है, वहाँ व्यक्ति हिंसा में प्रवृत्त हो जाता है, वहाँ वह क्षमाशील नहीं रह सकता। इन प्रथम दोनों प्रकार की हिंसा को अनिवार्य हिंसा की कोटि में लिया जा सकता है। संकल्पपूर्वक किसी की हत्या करना यह अणुव्रत को स्वीकार्य नहीं है। इस संकल्पजा हिंसा से हर व्यक्ति को बचना चाहिए।

सप्ताह का तीसरा दिन 'अणुव्रत प्रेरणा दिवस' के रूप में मनाया गया। मुनिश्री ने कहा कि अणुव्रत की प्रेरणा व्यक्ति के भीतर उतर जाए तो इंसान स्वस्थ इंसान बन सकता है। अणुव्रत व्यक्ति सुधार की बात पर बल देता है। व्यक्ति के साथ ही समाज सुधार और उससे राष्ट्र सुधार की बात जुड़ी हुई है। अणुव्रत सभी वर्ग और जाति के लोगों के लिए उपयोगी है। अणुव्रत का अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है। इस अभियान की प्रासंगिकता सदा बनी रहेगी। छतरसिंह नाहटा के इक्कीस दिनों की तपस्या की अनुमोदना का कार्यक्रम भी रहा।

चौथा दिन 'पर्यावरण दिवस' के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर मुनिश्री ने कहा कि पर्यावरण प्रदूषण आज के युग की विकट समस्या है। यह अनेक-अनेक समस्याओं की जनक है। व्यक्ति अपने स्वार्थ के लिए वृक्षों को काट देता है, पानी का दुरुपयोग करता है, धरती का दोहन करता है, गाड़ियों के अत्यधिक इस्तेमाल करके वायुमंडल को दूषित कर देता है, कई-कारखाने भी दिन-रात धुआँ छोड़कर

आकाश को कालिमा से भर देते हैं, इसके अलावा भी पर्यावरण प्रदूषण के अनेक रूप हैं। अणुव्रत ने इस समस्या के निवारण के लिए नियम बना दिया—'पर्यावरण की समस्या के प्रति मैं जागरूक रहूँगा, हरे-भरे वृक्ष नहीं काटूँगा, पानी, बिजली आदि का अपव्यय नहीं करूँगा।' व्यक्ति अपने व्यवहार में संयम करना शुरू करे तो पर्यावरण की समस्या का समाधान स्वतः ही हो सकता है।

पाँचवाँ दिन 'नशामुक्ति दिवस' के रूप में मनाया गया। शासनश्री मुनि विजय कुमार जी ने कहा कि नशा जीवन का सर्वनाश करने वाला है। व्यक्ति कुसंगत में पड़कर या दूसरों की देखा-देखी नशे की लत में पड़ जाता है, फिर वह लत उसे पकड़ लेती है, सदा के लिए वह उस लत का गुलाम बन जाता है। फिर व्यक्ति को अपने हित-अहित का भान नहीं रहता, विवेक का सूर्य वहाँ अस्त हो जाता है। अनेक दुष्कर्मों की जननी है शराब। अन्य नशे भी छोड़ने योग्य हैं, व्यक्ति को अपनी स्वस्थता के लिए नशेमात्र से दूर रहना चाहिए।

छठा दिन 'अनुशासन दिवस' के रूप में मनाया गया। शासनश्री मुनिश्री ने कहा कि जीवन के निर्माण में कई तत्त्व उपयोगी हैं, उनमें एक है अनुशासन। बच्चा जब तक समझदार नहीं हो जाता, तब तक एक माँ को उसका पूरा ध्यान रखना पड़ता है। जो बच्चा माँ के अनुशासन की अवहेलना करता है, उसके निर्माण में कुछ कमी रह जाती है। इसी रित शिष्य पर गुरु का अनुशासन जरूरी होता है। अनुशासन में विधि-निषेध दोनों का समावेश होता है। अनुशासन व्यक्ति के हित के लिए होता है। अनुशासन के क्षेत्र में तेरापंथ का नाम गौरव से लिया जा सकता है। सैकड़ों साधु-साध्वियाँ और लाखों श्रावक-श्राविकाओं पर यहाँ एक गुरु का अनुशासन चलता है। गुरु जैसा आदेश निर्देश करते हैं, उनके लिए वही आर्षवाणी बन जाती

है। उस ओर कदम बढ़ जाते हैं। अपेक्षा है—पारिवारिक-सामाजिक-राष्ट्रीय जीवन में भी अनुशासन को प्रतिष्ठा मिले।

सातवाँ एवं अंतिम दिन 'जीवन विज्ञान दिवस' के रूप में मनाया गया। मुनिश्री ने कहा कि जीवन विज्ञान शिक्षा जगत से जुड़ा हुआ आचार्य तुलसी का अवदान है। उन्होंने अनुभव किया शिक्षा जो कि विद्यार्थियों के जीवन निर्माण का मुख्य घटक तत्त्व है, वह भी कहीं-कहीं समस्या बन रहा है। यही कारण है कि विद्यार्थी अच्छी डिग्री हासिल करके भी व्यसन, भ्रष्टाचार और आतंकवाद जैसी हरकतों में लिप्त हो जाते हैं। शिक्षा की निष्पत्ति है, अच्छे मानव का निर्माण। इसी लक्ष्य को लेकर उन्होंने जीवन विज्ञान का उपक्रम प्रारंभ किया। शिक्षा शास्त्रियों ने इसकी उपयोगिता को स्वीकार किया। पूज्यप्रवर ने इसमें अणुव्रत और प्रेक्षाध्यान दोनों का समावेश कर दिया। संकल्प और प्रयोग से जुड़ी हुई यह पद्धति है। लाखों विद्यार्थियों ने जीवन विज्ञान का प्रशिक्षण प्राप्त करके अपनी क्षमताओं को विकसित किया।

इस साप्ताहिक कार्यक्रम में प्रतिदिन शासनश्री मुनिश्री का विषय अनुरूप गीत हुआ। अणुव्रत महिला टीम का मंगल गीत प्रारंभ में होता। कार्यक्रम में यथावकाश मुनि आत्माराज जी, अणुव्रत समिति के निवर्तमान अध्यक्ष प्रदीप सुराना, वर्तमान अध्यक्ष विनोद नाहटा, संरक्षक रेखा राम गोदारा, श्रद्धानिष्ठ श्रावक सूरजमल नाहटा, नरेंद्र दुधोड़िया, तेरापंथ सभा के मंत्री चमन दुधोड़िया, महिला मंडल अध्यक्ष मंजु दुधोड़िया सहित अनेक गणमान्यजनों ने गीत, मुक्त, कविता, भाषण के द्वारा अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। प्रदीप सुराना ने उनकी सेवाओं के लिए अणुव्रत समिति के सदस्यों के द्वारा सम्मानित किया गया। सातों दिन के कार्यक्रम का संचालन अध्यक्ष विनोद नाहटा ने किया।

भिक्षु निर्वाण स्थली पर धम्म जागरण सिरियारी।

शासनश्री मुनि मणिलाल जी तथा मुनि धर्मेश कुमार जी स्वामी के सान्निध्य में तेरस के उपलक्ष्य में धम्म जागरण का आयोजन किया गया। इस तेरस पर नौसारी से मामा-भांजा की जोड़ी ने समागत श्रद्धालुओं को भक्तिरस में सराबोर कर दिया। दोनों गायक सरगम के फाइनल राउंड में पहुँचे हुए हैं। ज्ञातव्य यह है कि नवसारी में संचालित 'भिक्षु भजन मंडली' में सक्रिय संगायक हैं।

मुनि धर्मेश कुमार जी स्वामी ने निर्विचार जाप प्रायोगिक तौर पर करवाया। लोगों ने माला का संकल्प भी किया। मुनि आकाश कुमार जी ने और मुनि हितेंद्र कुमार जी ने गीत की प्रस्तुति दी। सभा में उपस्थित एक छोटी-सी बच्ची प्रांजल ने भिक्षु अष्टकम के प्रथम श्लोक का संगान किया। पाली से आई हुई मीना डागा ने भी गीत की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम के अंत में विजय जैन टोहाना ने दोनों संगायकों को सम्मानित किया। इस अवसर पर सात राज्यों के लोग उपस्थित थे।

दंपति शिविर का आयोजन

साउथ कोलकाता।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में तथा तेयुप व तेमम के तत्त्वावधान में दंपति शिविर का आयोजन तेरापंथ भवन में हुआ। 'कैसे सुखमय हो दाम्पत्य जीवन' पर विचार रखते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि परिवार रूपी रथ खींचने वाले दो मजबूत आधारभूत व्यक्तियों का संयुक्त नाम है—दंपति। परिवार के केंद्र बिंदु का नाम दंपति है। दंपति का तात्पर्य एक स्त्री पुरुष से है। जो विधिवत विवाह के बंधन में बंध चुके हैं। दोनों के सहयोग से ही घर-परिवार व दाम्पत्य जीवन में खुशहाली आ सकती है।

मुनिश्री ने आगे कहा कि दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाने के लिए सहिष्णुता, स्नेहभाव, समर्पण, सेवा, सहयोग, सामंजस्य, सकारात्मक सोच, श्रम, संवाद आदि सूत्रों की आवश्यकता है। संदेह, अविश्वास दाम्पत्य जीवन के बाधक तत्त्व हैं। मुनिश्री ने कहा कि पति-पत्नी एक-दूसरे को उचित सम्मान दें, फिजूल खर्ची से बचें, आडंबर प्रदर्शन से दूर रहें। एक-दूसरे के विचारों को समझें, आलोचना से बचें, धर्ममय जीवन जीएँ, जिससे जीवन श्रेष्ठ बन सकता है।

मुनि परमानंद जी ने कहा कि दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाने के लिए अनाग्रहमय जीवन जीएँ। मुनि कुणाल कुमार जी ने गीत प्रस्तुत किया। मनीष बोरड़, उपासक सुशील बाफना, उपासिका सुप्रिया सामसुखा ने विचार रखे। स्वागत भाषण तेयुप के अध्यक्ष राकेश नाहटा व आभार ज्ञापन तेमम की मंत्री अनुपमा नाहटा ने किया। संचालन मुनि परमानंद जी ने किया। मनीष बोरड़ व उनकी धर्मपत्नी रेखा बोरड़ का सभा द्वारा सम्मान किया गया। मनीष बोरड़ का परिचय सभा के सहमंत्री कमल किशोर कोचर ने दिया।

क्विवज प्रतियोगिता का आयोजन

विजयनगर।

तेरापंथ सभा भवन में मुनि दीप कुमार जी के सान्निध्य में तेयुप के निर्देशन में महातपस्वी, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के ५०वें दीक्षा कल्याणक महोत्सव वर्ष पर तेरापंथ किशोर मंडल क्विवज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

मुनि दीप कुमार जी ने कहा कि आचार्यश्री महाश्रमण जी तेरापंथ के 99वें अधिशास्ता हैं, उनका जीवन प्रेरणादाई है, उनके जीवन प्रसंगों पर आधारित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के आयोजन से स्वतः ही हमें महातपस्वी महामनीषी आचार्यश्री के जीवन को जानने और समझने का मौका मिला है। गुरुदेव का जीवन वृत्तांत किशोरों और युवाओं के लिए पथदर्शक है, इसी भावना से प्रेरित तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा आयोजित इस क्विवज में श्रावक-श्राविका समाज ने प्रतिभागी बनकर अपने ज्ञान में अभिवृद्धि की है। मुनि काव्य कुमार जी का भी अच्छा श्रम रहा।

प्रतियोगिता में प्रथम स्थान ज्योतिचरण को मिला, द्वितीय स्थान शासन सरताज, तृतीय स्थान शांति दूत को मिला। प्राप्त टीमों को प्रायोजक मनोहरलाल बाबेल परिवार द्वारा पारितोषिक दिया गया। तेयुप, विजयनगर अध्यक्ष राकेश पोखरना, अभातेयुप साथी एवं तेयुप उपाध्यक्ष विकास बांठिया, संगठन मंत्री पवन बैद, पूर्व तेयुप अध्यक्ष राकेश दुधोड़िया, संपत चावत, सभा, महिला मंडल के पदाधिकारी, परिषद के साथी उपस्थित रहे। प्रतियोगिता में संयोजक नमन चावत, सह-संयोजक दर्शन बाबेल एवं तेरापंथ किशोर मंडल टीम से रौनक बोथरा का श्रम रहा। किशोर मंडल संयोजक नमन चावत ने सभी का स्वागत किया। आभार ज्ञापन संयोजक विशाल सामसुखा ने किया। कार्यक्रम का संचालन तेयुप पूर्व अध्यक्ष अभिषेक कावड़िया एवं उपाध्यक्ष विकास बांठिया ने किया।

नुक्कड़ नाटक का मंचन

गंगाशहर।

युवाओं को जागरूक करने के लिए तेरापंथ कन्या मंडल, गंगाशहर ने श्री जैन पब्लिक स्कूल में नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किया। जिसमें उन्होंने बताया कि आजकल जगह-जगह हुक्का बार, मद्यपान, सिगरेट और अन्य मादक द्रव्यों का सेवन बढ़ता जा रहा है। जो सिर्फ एक व्यक्ति के लिए नहीं बल्कि उसके पूरे परिवार के लिए खतरनाक साबित हो रहे हैं। इसकी लत लगने से बहुत तरह की गंभीर बीमारियाँ हो रही हैं। समाज में मौजूद युवा आजकल फैशन के चक्कर में व्यसन के रास्ते पर आ रहे हैं, जो कि चिंताजनक और कष्टदायक है, बहुत से युवा इसकी गिरफ्त में पड़ते जा रहे हैं।

नाटक को शाला के विद्यार्थियों और शिक्षकों ने बहुत सराहा। नाटिका के पश्चात सभी विद्यार्थियों ने संकल्प किया कि वो कभी किसी प्रकार का नशा नहीं करेंगे। कन्या मंडल प्रभारी सीमा बोथरा, सहप्रभारी अंकिता सेठिया, कन्या मंडल संयोजिका प्रिया संचेती, सह-संयोजिका मुदिता डाकलिया, महक बोथरा, वर्षा बोथरा, मुस्कान सिंधी, दिव्या नाहर, यामिनी सेठिया, प्रेक्षा भूरा, तुलसी महनोत, निकिता और कुमकुम का सक्रिय सहयोग प्राप्त हुआ।



त्रिदिवसीय अखंड जाप का आयोजन

कृष्णा नगर, दिल्ली।

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी की प्रेरणा से भगवान महावीर स्वामी के २५५०वें निर्वाण दिवस के अवसर पर उपवास, बेले-तेले की तपस्या के साथ त्रिदिवसीय अखंड जाप का क्रम उत्साह व सामायिक सहित लयबद्ध चला। जिसमें सैकड़ों लोगों ने भाग लेकर साधना का क्रम बनाया।

धनतेरस के दिन मुनिश्री के मुखारविंद से मंगलपाठ श्रवण कर संस्कारकों से बही-खाता पूजन की विधि को समझकर लगभग १०० परिवारों ने तेरापंथ भवन में सामुहिक पूजन किया। जो प्रथम बार होने

के साथ-साथ सभी को आकर्षक भी लगा। संस्कारक विमल गुनेचा, मनीष छल्लाणी, हेमराज राखेचा, महेंद्र श्यामसुखा, अशोक सिंधी एवं राकेश पुगलिया का योगदान रहा। तेयुप, दिल्ली के सहमंत्री शिवम छल्लाणी एवं क्षेत्रीय संयोजक मिलन बोधरा का श्रम रहा।

दीपावली के अवसर पर मुनिश्री के सान्निध्य में सामुहिक जाप, महावीर आरतियाँ, मंत्रों के उच्चारण पश्चात वृहद मंगलपाठ का कार्यक्रम रहा। काफी परिवारों ने प्रथम बार पटाखे, फूल, दीप, अगरबत्ती का भी प्रयोग नहीं किया। पूर्ण निरवद्य रूप से दीपावली पर्व मनाया।

‘क्या है भगवान महावीर की अमर देन’ विषय पर मुनि कमल कुमार जी ने कहा कि जैन धर्म निवृत्ति का मार्ग है पाँचों समितियाँ भी हमें। प्रवृत्ति करते हुए निवृत्ति की ओर प्रेरित करती हैं। जैसे देख-देखकर चलना अर्थात् बिना देखे नहीं चलना। भाषा समिति बोलना परंतु बिना सोचे नहीं बोलना। इस प्रकार पाँचों समितियों के विषय में विस्तार से बताया। इस अवसर पर मुनि नमिकुमार जी और सभा के मंत्री हेमराज राखेचा ने भी अपने भावों को प्रस्तुत किया। बाबूलाल मालू ने २४ प्रहरी पौषध कर विशेष श्रद्धा भक्ति का परिचय दिया। कई लोगों ने चार प्रहरी पौषध किए।

निःशुल्क स्वास्थ्य जाँच शिविर का आयोजन

राजाजीनगर।

तेयुप द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर, श्रीरामपुरम के अंतर्गत कन्नड़ फिल्म कलाकार पुनीत राजकुमार की द्वितीय पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में निःशुल्क स्वास्थ्य जाँच शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें कुल १६ प्रकार की सामान्य स्वास्थ्य संबंधित जाँच समावेश की गई। शिविर की शुरुआत सामुहिक नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से की गई। कुल ४८ लोगों ने इस शिविर का लाभ लिया। स्थानीय लोगों को सेंटर द्वारा प्रदत्त सेवाओं से अवगत करवाया गया।

कैंप को व्यवस्थित आयोजन करने में एटीडीसी स्टॉफ स्मिता, दीपाश्री एवं पवन का सहयोग रहा। इस अवसर पर तेयुप निवर्तमान अध्यक्ष अरविंद गन्ना, मुकेश भंडारी, अजिंक्य चौधरी, अभिषेक पीपाड़ा, सुनील मेहता एवं हरिश पोरवाड़ ने अपनी सेवाएँ प्रदान की।

दो दिवसीय निःशुल्क एक्स्पंक्वर थैरेपी चिकित्सा कैंप का आयोजन

एचबीएसटी, हनुमंतनगर।

एटीडीसी के अंतर्गत दो दिवसीय थैरेपी कैंप का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण से हुई। तेयुप अध्यक्ष अंकुश बैद ने उपस्थित सभी सदस्यों का स्वागत कर एटीडीसी की गतिविधियों के बारे में बताया। निःशुल्क कैंप से २० लोग लाभान्वित हुए। एक्स्पंक्वर सूइयों के द्वारा किया जाने वाला एक सफल ट्रीटमेंट है। इसमें डॉक्टर मरीज के रोग का पता लगाकर उस खास जगह पर सुइयों शरीर के एनर्जी पावन के बहाव को कंट्रोल करने में फायदा देती है। एक्स्पंक्वर तमाम बीमारियों के लिए सहायक होता है। सिवाय उन बीमारियों के जिसमें आपको ऑपरेशन या सर्जरी की जरूरत होती है।

थैरेपिस्ट सोनम हिरावत ने थैरेपी पश्चात परामर्श भी निःशुल्क उपलब्ध कराया। थैरेपी पाने वालों ने इस इलाज के उपरांत काफी आराम महसूस किया। इस आयोजन को सुल बनाने में मंत्री राजीव हिरावत, सहमंत्री देवेन्द्र आंचलिया, सहमंत्री-द्वितीय सुमित चिंडालिया, एटीडीसी प्रभारी गौतम खाब्या, सहप्रभारी स्वरूप चोपड़ा, एटीडीसी टीम अग्नेश व महादेवम्मा का विशेष श्रम रहा।

दंपति कार्यशाला का आयोजन

छोटी खाटू।

साध्वी संघप्रभा जी के सान्निध्य में दंपति कार्यशाला जिसका विषय ‘कैसे निभाएँ एक-दूजे का साथ’ कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का मंगलाचरण सुमधुर गीतिका से किरण देवी धारीवाल एवं गुलाब देवी वेद ने किया। साध्वी संघप्रभा जी ने कहा कि दंपत्य केवल तन का नहीं बल्कि दिल की गहराइयों का रिश्ता है। जो खिलता जिंदगी का गुलिस्ता है। पति-पत्नी ऐसे हमसफर होते हैं जो ता उम्र एक-दूसरे का हाथ थामकर जीवन के हर मोड़ पर आने वाली मुश्किलों को आसान बना लेते हैं। स्नेह, समर्पण, सहजता,

सहनशीलता, सकारात्मक सोच, संवेदनशीलता, सेवाभावना कुछ ऐसे तत्त्व हैं जो न केवल दंपत्य को अपितु परिवार को भी मजबूती देते हैं।

इसी संकलन में साध्वी प्रांशुप्रभा जी ने कहा कि दंपत्य जीवन को सुखी बनाने के लिए सहनशीलता, विनम्रता, विश्वास एक-दूसरे के विचारों को समझना आदि गुण होना बहुत आवश्यक है। इसी क्रम में सभा मंत्री विकास सेठिया ने कविता के द्वारा अपनी भावना व्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन तेममं की पूर्व मंत्री सुनीता कोचर ने किया। कार्यक्रम में १० दंपतियों ने भाग लिया। कार्यक्रम में श्रावक-श्राविकाओं की सराहनीय

उपस्थिति रही। कार्यक्रम का आभार ज्ञापन मंगलचंद्र डूंगरवाल ने किया।

तेयुप द्वारा मानव सेवा कार्य

राजाजीनगर।

तेयुप, राजाजीनगर द्वारा सरस्वती एजुकेशनल एंड चैरिटेबल ट्रस्ट में ‘खुशियों की दिवाली’ का प्रथम सेवा कार्य संपादित किया गया। परिषद द्वारा सामुहिक नमस्कार महामंत्र का उच्चारण किया गया। आश्रम वार्डन पदमा एवं जोया ने एजुकेशनल एंड चैरिटेबल ट्रस्ट की जानकारी प्रदान की। सभी नन्हे-मुन्ने बच्चों एवं ट्रस्ट के सदस्यों ने परिषद परिवार का धन्यवाद व्यक्त किए।

तेयुप अध्यक्ष कमलेश गन्ना ने कन्नड़ राज्योत्सव एवं दीपावली की शुभकामनाएँ दी। पदमा के प्रति धन्यवाद व्यक्त किया। इस अवसर पर तेयुप से अरविंद कोठारी, जयंतीलाल गांधी, ललित मुणोत, मुकेश भंडारी एवं विक्रम बोहरा की उपस्थिति रही।

— द्वितीय सेवा कार्य में ‘श्री महालक्ष्मी सीनियर सिटीजन डे केयर सेंटर’ में तेयुप द्वारा ‘खुशियों की दिवाली-बॉटें खुशियों की उपहार’ सेवा कार्य संपादित किया गया। परिषद परिवार द्वारा सामुहिक नमस्कार महामंत्र का उच्चारण किया गया। आश्रम के वार्डन गोविंदराजू ने महालक्ष्मी सीनियर सिटीजन डे केयर सेंटर की जानकारी प्रदान की। वृद्ध महिलाओं ने परिषद परिवार का धन्यवाद व्यक्त किया।

तेयुप अध्यक्ष कमलेश गन्ना ने दीपावली की शुभकामनाएँ दी। इस अवसर पर तेयुप से कमलेश चोरड़िया, अरविंद कोठारी, जयंतीलाल गांधी, ललित मुणोत, मुकेश भंडारी एवं विक्रम बोहरा उपस्थित थे।

ज्ञानशाला प्रदर्शनी का आयोजन

जोधपुर।

मेघराज तातेड़ भवन में साध्वी कुंदनप्रभा जी के सान्निध्य में ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा ज्ञानशाला प्रदर्शनी लगाई गई। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री जी ने मंगलाचरण से किया। स्वागत भाषण वी०आर० जैन द्वारा किया गया।

ज्ञानशाला के बच्चों ने अपनी प्रतिभा को निखारते हुए प्रदर्शनी के अंतर्गत नवकार महामंत्र, माता त्रिशला के १४ स्वप्न, नौ तत्त्व, लोक की रचना, जीव-अजीव के भेद, चार गति, ५ जाति, उज्वल और मलिन आत्मा की संरचना, आठ कर्म और उनके फल, साधु के ५ महाव्रत, श्रावक के १२ व्रत, १२ भावनाएँ, लेश्या और उसके प्रकार को अपनी कला के माध्यम से प्रदर्शित किया। नन्हे बच्चों ने भगवान महावीर, आचार्य महाश्रमण जी आदि की सुंदर ड्राइंग से सबका मन मोहा। बच्चों के साथ-साथ साध्वीश्री जी ने भी हस्तनिर्मित कलाकृति का प्रदर्शन किया।

साध्वी कुंदनप्रभा जी एवं सहवर्ती साध्वीश्री जी ने प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए कहा कि सरदारपुरा ज्ञानशाला बच्चों में विविध प्रयासों से आध्यात्मिक संस्कारों के बीजारोपण का सुंदर कार्य कर रही है। बच्चों ने सुंदर प्रस्तुति से जैन धर्म के तत्त्वज्ञान, जीव-अजीव, नौ तत्त्वों की व्याख्या की। भावी पीढ़ी में संस्कारों का जागरण इसी प्रकार होता रहे, यही मंगलकामना।

तेयुप, सरदारपुरा सदस्य निरंजन तातेड़ ने बताया कि ज्ञानशाला में बच्चों में संस्कारों के विकास के साथ-साथ सर्वांगीण विकास भी होता है। समाज के वरिष्ठ जनों ने कला, तत्त्व ज्ञान, वक्तव्य शैली और प्रस्तुति कौशल को देखकर ज्ञानशाला की

प्रशंसा की।

कार्यक्रम में सभा अध्यक्ष सुरेश जीरावला, मंत्री महावीर चोपड़ा, निर्णायक मर्यादा कुमार कोठारी, महिला मंडल अध्यक्ष दिलखुश तातेड़, मंत्री चेतना घोड़ावत, तेयुप अध्यक्ष कैलाश जैन, टीपीएफ अध्यक्ष नरेश जैन, माणकचंद तातेड़, ओमप्रकाश गोलेछा आदि गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही।

प्रदर्शनी के सफल संयोजन में अर्चना बुरड़, सविता तातेड़, संगीता तातेड़, मधु तातेड़, कल्पना छाजेड़, समता सालेचा, मंजु जैन, मीना वडेरा, कमला श्यामसुखा, कनिका जैन, मीनाक्षी छाजेड़, संगीता मेहता आदि प्रशिक्षिकाओं का योगदान रहा।

◆ हमारे जीवन में आत्मबल और मनोबल का बहुत महत्त्व है। जिस व्यक्ति में आत्मबल और मनोबल नहीं होता, उसके लिए थोड़ा-सा कठिन कार्य करना भी मुश्किल हो जाता है।

— आचार्यश्री महाश्रमण

आत्मा का शुद्ध स्वरूप, कर्मयुक्त अवस्था क्षायिक भाव है : आचार्यश्री महाश्रमण

नंदनवन, ६ नवंबर, २०२३

महामनीषी आचार्यश्री महाश्रमणजी ने जिनवाणी का रसास्वाद करते हुए फरमाया कि हमारी आत्मा, चेतना, जीवन का स्वरूप क्या है? जीव का स्वरूप भाव है। द्रव्य आत्मा एक पिंड हो गया जो असंख्येय प्रदेशों वाला है। भाव कर्मों से संबंधित है। कर्मों के उदय और विलय से होने वाला चेतना का परिणाम भाव है।

जैसे आठों कर्मों का क्षय हो गया तो अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन निरंतरायता आदि-आदि गुण प्रकट हो जाते हैं। ये गुण कर्मों के क्षय होने से उजागर हुए हैं। क्षायिक

भाव जीव का स्वरूप है। उपशम और क्षयोपशम भाव भी क्षायिक भाव के कुछ अंश हैं। जैसे श्रावक सामायिक करता है, तो कुछ समय के लिए श्रमण की तरह बन जाता है।

क्षायिक भाव और उपशम भाव की तुलना हम साधु और श्रावक से कर सकते हैं। ग्यारहवें गुणस्थान में क्षायिक सम्यक्त्व तो तो सकता है, पर वे श्रेणी उपशम भाव की है। उपशम भाव तो चार दिनों की चाँदनी जैसा है। नंदनवन की तुलना भी उपशम भाव से कर सकते हैं। उपशम भाव गया तो वो नजारा गया फिर कषाय का उदय चालू हो

जाता है। संसारी अवस्था में जीव के औदयिक भाव भी रहता है। क्षायिक भाव शुद्ध स्वरूप है, तो औदयिक भाव विकृत रूप है।

भगवती में भाव को नाम कहा गया है, वो छः प्रकार का होता है। जैसे भाव के पाँच प्रकार बताए गए हैं। नमन, नाम, परिणाम, भाव ये एकार्थक होते हैं। भाव के छः प्रकार नाम रूप में इस प्रकार हैं—औदयिक, औपशमिक, क्षायिक, क्षायोपशमिक, पारिणामिक और सान्निपातिक। संयोग से होने वाला भाव सान्निपातिक भाव कहलाता है।

आत्मा का शुद्ध स्वरूप, कर्ममुक्त

अवस्था क्षायिक भाव है। हमारी साधना फलित होते हुए पूर्ण फलित हो जाए तो क्षायिक भाव आ सकता है। केवली के भी चार अघाती कर्म बाकी हैं, इसलिए उनके पूर्णतया क्षायिक भाव नहीं है। दुनिया में ऐसा कोई जीव प्रतीत नहीं होता है कि जिसके क्षायिक या क्षायोपशमिक भाव न हो। स्थावर जीवों में भी क्षयोपशम भाव होता है, जो अत्यंत अविकसित प्राणी है। दोनों में से एक भाव तो होगा ही होगा। जयाचार्य के अनेक ग्रंथों में तत्त्व बोध विस्तार रूप से मिलता है। आचार्य भिक्षु के ग्रंथ तो तेरापंथ के शास्त्र हैं।

डॉ० पीयूष सक्सेना ने चरोपैथी स्पेशलिस्ट एवं उपासक पारसमल दुगड़ ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि आसन-प्राणायाम से शारीरिक बल बढ़ सकता है। हमारे में अनंत शक्ति है, पर कुछ कारण है, जिससे वह प्रकट नहीं हो सकती। वे हैं—भय, आलस्य, अज्ञान, संकल्प-शक्ति का अभाव, एकाग्रता का अभाव आदि। हमें ध्यान-जप से शक्ति का जागरण कर शक्ति-संपन्न बनने का प्रयास करना चाहिए। कार्यक्रम का संचालन मुनि विनेश कुमार जी ने किया।

युवा सम्मेलन का आयोजन

मैसूर।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में मुनि रश्मि कुमार जी, मुनि प्रियांशु कुमार जी के सान्निध्य में अभातेयुप उपाध्यक्ष-प्रथम पवन मांडोत की अध्यक्षता में युवा शक्ति का शंखनाद युवा सम्मेलन का आयोजन तीन चरणों में संचालित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता मोटिवेशनल स्पीकर राकेश खटेड़, चेन्नई से पधारे। कार्यक्रम का शुभारंभ पवन मांडोत, विशेष अतिथि राकेश खटेड़ व सभा अध्यक्ष प्रकाश दक रॉयल, महिला मंडल अध्यक्षा लक्ष्मी देवी भटेवरा, तेयुप अध्यक्ष कमलेश गांधी द्वारा ध्वजारोहण कर किया गया।

मुनिश्री द्वारा नवकार मंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। कन्या मंडल ने महावीर अष्टकम का गान किया। तेयुप अध्यक्ष कमलेश गांधी ने पधारे हुए विशिष्ट अतिथि व मेहमानों का स्वागत किया। सभा अध्यक्ष व महिला मंडल अध्यक्षा ने अपना वक्तव्य दिया। तेयुप सदस्य कमल बोहरा ने विशिष्ट अतिथि का परिचय दिया। पवन मांडोत ने कहा कि आदमी जिस गति से मोबाईल टेक्नोलॉजी के ऊपर आकर्षित हो रहा है। अधिक समय मोबाईल पर बीता रहा है।

आज यह कैसर की तरह लाइलाज बना हुआ है। इसलिए युवाओं को चाहिए इस बीमारी से ऊपर कैस उठा जाए इस ओर युवा को सावधान होना चाहिए। और इससे कैसे दूर हो सकें, उसके बारे में कुछ टिप्स बताए।

मुख्य वक्ता राकेश खटेड़ ने पूरी युवा शक्ति को बदलते हुए भारत के साथ युवाओं को तेरापंथ धर्म में और आज के विज्ञान में क्या समानता है उसकी संपूर्ण जानकारी दी। मुनि रश्मि कुमार जी ने कहा कि युवाओं को अच्छा सोचना चाहिए, सादा जीवन और तनाव मुक्त जीवन जीना चाहिए। आगे मुनिश्री ने कहा कि आज के युवाओं में पाँच शील होने चाहिए—सहनशील, कर्मशील, विनयशील, श्रद्धाशील, चारित्रशील। मुनि प्रियांशु कुमार जी ने युवाओं को संबोधित कर प्रेरणा दी कि युवाओं को नशे से दूर रहना चाहिए।

कार्यक्रम के दूसरे सत्र में अभातेयुप उपाध्यक्ष-प्रथम पवन मांडोत एवं सम्मेलन के मुख्य वक्ता राकेश खटेड़ ने युवाओं को विज्ञान एवं दर्शन के विषय में जानकारी देते हुए कहा कि युवक समाज की रीढ़ की हड्डी है। युवक अच्छे हैं तो समाज अच्छा

है। मुख्य वक्ता ने युवकों से नए-नए कार्य के बारे में शंखनाद करने का आह्वान किया।

सम्मेलन के तृतीय सत्र में जिज्ञासा, समाधान का कार्यक्रम रखा, जिसमें पवन मांडोत ने बाहर से पधारी हुई सभी परिषदों के जिज्ञासा-समाधान का निवारण किया एवं समागत परिषदों का सम्मान का कार्यक्रम हुआ। मुख्य वक्ता राकेश खटेड़ एवं मुख्य प्रायोजक का भी परिषद द्वारा सम्मान किया गया। अभातेयुप के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष-प्रथम पवन मांडोत एवं अभातेयुप परिवार से पधारे सदस्यों का भी सम्मान किया।

आभार तेयुप संगठन मंत्री मोहित बोहरा ने यिका। कार्यक्रम का संचालन विक्रम पितलिया व प्रमोद मुनोत ने किया। कार्यक्रम के मुख्य प्रायोजक बाबूलाल, कन्हैयालाल रहे। सुरेशचंद्र विकास कुमार उपहार के प्रायोजक रहे। मंड्या, हुनसुर, नंजनगुड, चित्रदुर्गा परिषद तथा परिषद न होते हुए भी गुंडलपेट, एचडी कोटे, के०आर० नगर, पांडवपुरा आदि क्षेत्र के करीब १५० युवा साथियों ने कार्यक्रम में अपनी सहभागिता दर्ज की।

किशोर मंडल द्वारा अखंड जप का आयोजन

साउथ हावड़ा।

तेयुप के निर्देशानुसार तेयुप, साउथ हावड़ा के तत्त्वावधान में तेरापंथ किशोर मंडल साउथ हावड़ा द्वारा त्यगोमय अभियान के तहत नवरात्रि के इस पर्व पर अपने कर्मों की निर्जरा हेतु पूरे नवरात्रि के नौ दिन सभी किशोरों ने नौ-नौ त्याग किए और साथ ही जपमय अखंड जप अभियान में किशोरों ने साउथ हावड़ा तेरापंथी सभा में 'ॐ अ सि आ उ सा नमः, ॐ अ भि रा शि को नमः', उपसर्गहर स्तोत्र, लोगस्स पाठ, पार्श्वनाथ धरणेन्द्र पद्मावती मंत्र, विघ्न हरण मंगल करण एवं मंगलभावना का मंत्र-जाप किया।

सभी किशोरों ने बड़े हर्षोल्लास के साथ इस अभियान को सफल बनाया। त्यगोमय में कुल ३६ किशोरों ने संकल्पित होकर कर्म निर्जरा की और जपमय अखंड जप में परिषद के मंत्री अमित बेगवानी ने जाप में आए सभी किशोरों का स्वागत किया तथा उनके कार्यों की सराहना की। परिषद के कोषाध्यक्ष विजय राज पगारिया, संगठन मंत्री एवं पर्यवेक्षक रोहित बैद और वरिष्ठ सदस्य ऋषभ दुधोरिया ने अपनी सहभागिता दर्ज करवाई और किशोरों का उत्साह, बढ़ाया। जाप में किशोर मंडल के प्रभारी आशीष बैद, संयोजक अनंत चोरड़िया सहित राहुल दुगड़, हर्ष संचेती, अरिहंत जैन, अभिषेक बैद ने अपनी सहभागिता दर्ज करवाई।

उत्तर हावड़ा।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में उत्तर हावड़ा किशोर मंडलद्वारा सामुहिक अखंड जप का आयोजन सभा कार्यालय में किया गया। तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा 'ॐ अ सि आ उ सा नमः, ॐ अ भि रा शि को नमः', उपसर्गहर स्तोत्र, लोगस्स पाठ, पार्श्वनाथ धरणेन्द्र पद्मावती मंत्र, विघ्न हरण मंगल करण एवं मंगलभावना का मंत्र जाप किया गया।

सामुहिक अखंड जप में किशोर मंडल के प्रभारी भरत बैद, संयोजक प्रयोग बोथरा, सह-संयोजक नमन कुंडलिया सदस्य चिराग भंसाली, शौर्य बोथरा, प्रियांशु दुगड़, यश दुगड़ ने अपनी सहभागिता दर्ज कराई।

बैटले ऑफ वर्ड्स प्रतियोगिता का आयोजन

हैदराबाद।

तेयुप के तत्त्वावधान में तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा 'बैटले ऑफ वर्ड्स' प्रतियोगिता का आयोजन साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में डी०वी० कॉलोनी तेरापंथ भवन, सिकंदराबाद में हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से की गई। तेरापंथ किशोर मंडल के संयोजक खुशाल भंसाली ने पधारे हुए सभी का स्वागत किया। मंच संचालन जय पींचा ने किया और कार्यक्रम के नियमों की जानकारी दी। प्रतियोगिता में कुल २० वक्ताओं ने उत्साह के साथ भाग लिया। सभी प्रतिभागियों को ढाई मिनट का समय दिया गया।

साध्वी राजुलप्रभा जी ने सभी का प्रोत्साहन बढ़ाते हुए प्रतिभागियों को कैसे भाषण देना चाहिए उसके टिप्स बताए। तेयुप के पूर्वाध्यक्ष राहुल श्यामसुखा एवं तेरापंथ किशोर मंडल ब्लू ब्रिगेड सदस्य के हर्ष गांधिया प्रतियोगिता के निर्णायक रहे। प्रतियोगिता में प्रथम रुचि सेठिया, द्वितीय चित्रारेखा दुगड़, तृतीय प्रकाश दुगड़ और प्रार्थना सुराणा का पुरस्कार द्वारा सम्मान किया गया।

साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने सभी को मंगल उद्बोधन दिया। आभार प्रकट किशोर मंडल के सह-संयोजक रूद्र बैद ने किया। अंत में साध्वीश्री जी के मंगलपाठ द्वारा कार्यक्रम संपन्न हुआ।

साधु हो या श्रावक यदि गलती हो जाए तो गुरु से.. (पृष्ठ १२ का शेष)

धर्म के प्रकार में चिकित्सा भी दो प्रकार की होती है—एक छेद प्रायश्चित और तप-स्वाध्याय प्रायश्चित। अलग-अलग विधि-सम्मत प्रायश्चित दिया जाता है। साधु हो या श्रावक यदि गलती हो जाए तो गुरु से प्रायश्चित स्वीकार कर शुद्ध हो जाए। छेद आए तो आए पर प्रायश्चित ले शुद्ध हो जाना चाहिए। गलती या दोष तो लग सकता है। प्रायश्चित लेने वाला ऋजुता से अपनी गलती या दोष को गुरु को बता देना चाहिए। ऋजुभूत की शोध हो सकती है।

प्रायश्चित लेने वाला ऋजुता का और प्रायश्चित देने वाला गंभीरता का प्रयोग करें। हमारे यहाँ सामान्यतया दो बार आलोचना लेने की विधि है। प्रायश्चित सबके लिए कल्याणकारी होता है। अपेक्षा हो तो आचार्य भी अपना प्रायश्चित ले ले। दूसरों का इलाज करने वाला खुद रोगी बन सकता है। पर प्रायश्चित ले लें तो आगे का रास्ता साफ हो सकता है।



आत्मा को कर्म-बंध से मुक्त बनने के लिए संवर और निर्जरा की साधना करें : आचार्यश्री महाश्रमण



नंदनवन, ८ नवंबर, २०२३

तीर्थकर के प्रतिनिधि, प्रेम के सागर आचार्यश्री महाश्रमण जी ने आगम वाणी की अमृत वर्षा करते हुए फरमाया कि हमारी इस लोकाकाश की दुनिया में अनेक द्रव्य-तत्त्व हैं और वे अपने ढंग से स्थित हैं। कुल छः द्रव्य

बताए गए हैं—धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, काल, पुद्गलास्तिकाय और जीवास्तिकाय।

यह लोक षड्-द्रव्यात्मक है। आकाश सबसे बड़ा द्रव्य होता है, इसका कोई आर-पार नहीं है। आकाश अनंत होता है। शास्त्रों में इच्छाओं को आकाश के समान अनंत बताया गया है। आकाशास्तिकाय के सामने अन्य द्रव्य तो क्षेत्र की दृष्टि से बहुत छोटे होते हैं। छः द्रव्यों में पाँच अस्तिकाय हैं। काल अस्तिकाय नहीं है। पाँच अस्तिकायों में चार अमूर्त हैं, केवल पुद्गलास्तिकाय मूर्त होता है।

पाँच अस्तिकायों में जीव चैतन्यमय बाकी चार अचेतन्यमय हैं। इन पाँच अस्तिकायों को पंचास्तिकाय कहते हैं, जो लोक में व्याप्त हैं। आकाशास्तिकाय तो लोक-अलोक दोनों में है। यहाँ प्रश्न किया गया है कि धर्मास्तिकाय के मध्य प्रदेश कितने होते हैं? यों तो धर्मास्तिकाय असंख्य प्रदेशों का पिंड है। धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय और एक जीव इन चारों के प्रदेश तुल्य-समान होते हैं और असंख्य होते हैं।

धर्मास्तिकाय के मध्य प्रदेश आठ होते हैं। इसी प्रकार अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय और एक जीव के भी मध्य प्रदेश आठ-आठ ही होते हैं। एक प्रांत मध्य प्रदेश नाम आगम में भी आया है। ये आठ प्रदेश मध्य प्रदेश कहलाते हैं, जो हर आत्मा में होते हैं। सारे असंख्य प्रदेश अमूर्त होते हैं। कर्मों से आत्मा से बंध होते हैं।

आत्मा कर्म-बंध से मुक्त बने इसके लिए संवर और निर्जरा की साधना करें। जिससे हम आत्मा को निर्मल बना सकते हैं। ध्यान की साधना भी इस जीवास्तिकाय को निर्मल बनाने का साधन बन सकता है।

आज प्रेक्षा इंटरनेशनल शिविर का समापन समारोह है। रशियन सिंगर तांतियाना ने 'तेरापंथ प्रणेता' गीत की प्रस्तुति दी। फ्लोरा निशाते-मेक्सिको, प्रेक्षा इंटरनेशनल के मंत्री गौरव कोठारी, प्रेक्षाध्यान के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि कुमार श्रमणजी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया। व्यवस्था समिति सदस्यों द्वारा गीत की प्रस्तुति हुई।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

सम्यक् ज्ञान के साथ सम्यक् दर्शन और सम्यक् आचार भी हो : आचार्यश्री महाश्रमण



नंदनवन, ७ नवंबर, २०२३

जिनवाणी के उद्गाता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि जैन शासन की श्वेतांबर तेरापंथ परंपरा में आगमों का उच्च स्थान है। हमारे यहाँ बत्तीस आगमों की मान्यता है। ग्यारह अंग, बारह उपांग, चार मूल, चार छेद और एक आवश्यक। जैसे अंग बारह होते हैं, इसलिए द्वादशांगी कहा गया है।

यहाँ प्रश्न किया गया है कि गणि-पिटक कितने प्रकार के होते हैं। गणि-पिटक आचार्य-साधु की मंजूषा होते हैं। जितना गृहस्थों के लिए धन की तिजोरी का महत्त्व है, वैसे ही आचार्य के लिए आगम का महत्त्व है। आगम आचार्य की संपदा है। आचार या तत्त्व संबंधी निर्णय करने के लिए आचार्य आगमों का अध्ययन करके देखते हैं कि उक्त संदर्भ में क्या लिखा है।

ग्रंथ तो अपने आपमें पुद्गल है, पर इनसे जो ज्ञान-गृहीत होता है, वह एक

बड़ी संपत्ति है। इस ज्ञान-संपत्ति को कोई चुरा नहीं सकता। यह तो भाव-मंजूषा है। श्रुत संपदा भाव श्रुत के निमित्त बनते हैं। तीर्थकर तो आगम-पुरुष होते हैं।

गणि-पिटक बारह अंगों वाला है, उसमें पहला अंग-आचार है। आचारंग या आचारो भी इसे कहते हैं। इसमें साधु के आचार संबंधी अनेक बातों का उल्लेख मिलता है। ज्ञान करने से आचार की प्रेरणा मिलती है। ज्ञान का सार आचार है। ज्ञान आचारण में आए। नागस्य सार, मायारो। इसके दो प्रकार हैं—आचारो और आयर चूला।

ज्ञान का महत्त्व तभी है, जब वह आचरण में आए। जिससे साधु राग से विराग में बढ़े, जिससे आदमी श्रेयो-कल्याणों में आगे बढ़े, जिससे मैत्री भावना की चेतना भावित हो जाए जिस शासन में वह ज्ञान है, धर्म-अध्यात्म विद्या का ज्ञान होता है। जिसके द्वारा तत्त्व का बोध हो वह अपने आपमें ज्ञान होता है।

सम्यक् ज्ञान के साथ सम्यक् दर्शन और सम्यक् आचार भी हो। आचार का हमारे जीवन में बड़ा महत्त्व है, उसके लिए ज्ञान की आवश्यकता होती है। आचारो श्रुत स्कंध की टीका भी है, चूर्ण भी है और हमारे धर्मसंघ में आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी द्वारा संस्कृत भाषा में भाष्य भी लिखा गया है। उसका हिंदी व अंग्रेजी में अनुवाद भी हुआ है। गुरुदेव तुलसी के समय यह कार्य शुरू हुआ था और संपन्न भी हो गया था। हम जीवन में ज्ञान का सार निकालने की चेष्टा करें। हम जीवन में आचार को भी स्थान देने का सम्यक् पालन करने का प्रयास करें। यह प्रयास हमारे लिए श्रेयस्कर हो सकता है।

जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित ग्रंथ 'फाउंटेंट आफ अमृत'—साध्वी अणिमाश्री जी और समणी ज्योतिप्रज्ञा जी द्वारा



लिखित 'वनस्पतिकाय-एक परिशीमन' पूज्यप्रवर को लोकार्पण हेतु समर्पित किए गए। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया।

अहमदाबाद कांकरिया-मणिनगर क्षेत्र में विराजित शासनश्री साध्वी रामकुमारी

जी, सरदारशहर का आज ८०वाँ दीक्षा दिवस है।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

साधु हो या श्रावक यदि गलती हो जाए तो गुरु से प्रायश्चित स्वीकार कर शुद्ध हो जाए : आचार्यश्री महाश्रमण

नंदनवन, ११ नवंबर, २०२३

अष्टगणी संपदा से सुशोभित आचार्यश्री महाश्रमण जी ने आगम वाणी की अमी वर्षा करते हुए फरमाया कि इंसान जो सामान्य स्तर का होता है, वह प्रथम गुणस्थान से छोटे गुणस्थान तक का आदमी हो सकता है। सामान्य इसलिए कि इनसे भूल हो सकती है। सातवें गुणस्थान से लेकर चौदहवें गुणस्थान के जो इंसान हैं, उनसे अशुभ योग रूप कोई गलती या प्रमाद नहीं हो सकता।

प्रमाद दो प्रकार का होता है—एक अशुभ योग रूप प्रमाद और एक प्रमाद आश्रव (अध्यात्मलीनता का अभाव)। अशुभ योग रूप प्रमाद का तो साधु के त्याग होता है, पर प्रमाद आश्रव का त्याग नहीं होता है। छोटे गुणस्थान में प्रमाद आश्रव चालू रहता है। इसलिए उसे प्रमत संयत गुणस्थान कहते हैं। गलती छोटी या बड़ी हो सकती है। पर उसका प्रायश्चित लेना होता है। कभी साधु के मजबूरी में भी प्रतिसेवना हो सकती है।

भगवती सूत्र में यहाँ प्रायश्चित दस प्रकार का बताया गया है—आलोचना, प्रतिक्रमण, तदफभया आदि। प्रायश्चित एक प्रकार की चिकित्सा पद्धति है। धर्म और अध्यात्म के क्षेत्र में हम आध्यात्मिक चिकित्सा मान सकते हैं। साधु से कोई गलती हो गई तो वह धर्म के संदर्भ में रोगी साधु है। आचार्य डॉक्टर होते हैं। प्रायश्चित दवा है। इससे गलती रूपी रोग ठीक हो सकता है।

(शेष पृष्ठ ११ पर)